Bhuvaneswar

Hema

Model: Web-MatchAnalysis

Order No: 121228001

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
9-10/04/1996	जन्म तिथि	05/04/1998
मंगल-बुधवार	दिन	रविवार
घंटे 05:15:00	जन्म समय	13:45:00 घंटे
घटी 58:08:04	जन्म समय(घटी)	19:10:11 घटी
India	देश	India
Muzaffarnagar	स्थान	Ayodhya
29:28:21 उत्तर	अक्षांश	26:47:31 उत्तर
77:42:30 पूर्व	रेखांश	82:11:59 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:10	स्थानिक संस्कार	-00:01:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:59:46	सूर्योदय	05:48:30
18:42:46	सूर्यास्त	18:19:58
23:48:22	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:51

मीन	लग्न	कर्क
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
धनु	राशि	कर्क
गुरु	राशि-स्वामी	चन्द्र
पूर्वाषाढ़ा	नक्षत्र	पुष्य
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शनि
1	चरण	2
परिघ	योग	सुकर्मा
विष्टि	करण	कौलव
भू-भूपेन्द्र	जन्म नामाक्षर	हे-हेमा
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
वानर	योनि	मेष
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	मध्य
मूषक	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 19वर्ष 10मा 4दि		09:43:50	मीन	लग्न	कर्क	21:32:24	शनि 10वर्ष 9मा 1दि	
चन्द्र		26:35:19	मीन	सूर्य	मीन	21:31:05	केतु	
13/02/2022		13:26:11	धनु	चंद्र	कर्क	09:07:12	05/01/2026	
13/02/2032		18:51:39	मीन	मंगल	मेष	00:23:30	05/01/2033	
चन्द्र	14/12/2022	09:48:11	मेष	बुध व	मीन	23:53:11	केतु	03/06/2026
मंगल	15/07/2023	22:54:45	धनु	गुरु	कुंभ	20:19:55	शुक्र	04/08/2027
राहु	13/01/2025	12:07:27	वृष	शुक्र	कुंभ	05:14:44	सूर्य	09/12/2027
गुरु	15/05/2026	06:30:28	मीन	शनि	मीन	28:29:08	चन्द्र	09/07/2028
शनि	14/12/2027	23:19:15	कन्या व	राहु	सिंह	16:15:04	मंगल	06/12/2028
बुध	15/05/2029	23:19:15	मीन व	केतु	कुंभ	16:15:04	राहु	24/12/2029
केतु	14/12/2029	10:26:05	मक	हर्ष	मक	18:11:20	गुरु	30/11/2030
शुक्र	15/08/2031	03:50:33	मक	नेप	मक	08:06:01	शनि	09/01/2032
सूर्य	13/02/2032	08:58:22	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:03:28	बुध	05/01/2033

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:22 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:51

लग्न-चलित

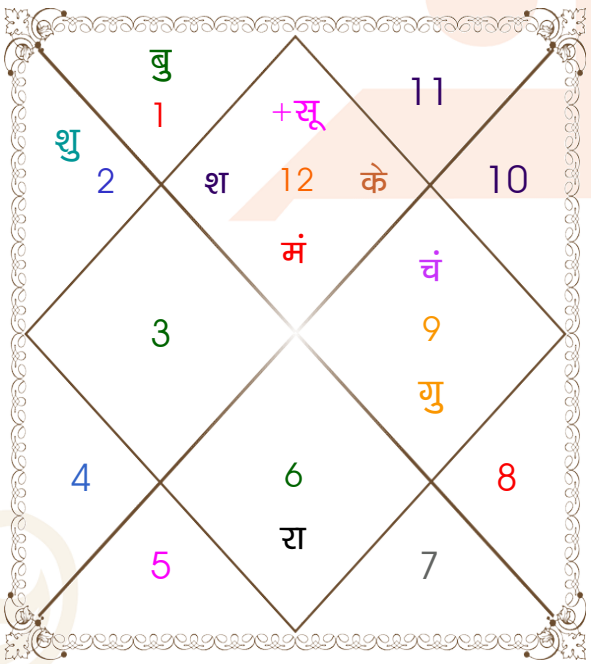

लग्न-चलित

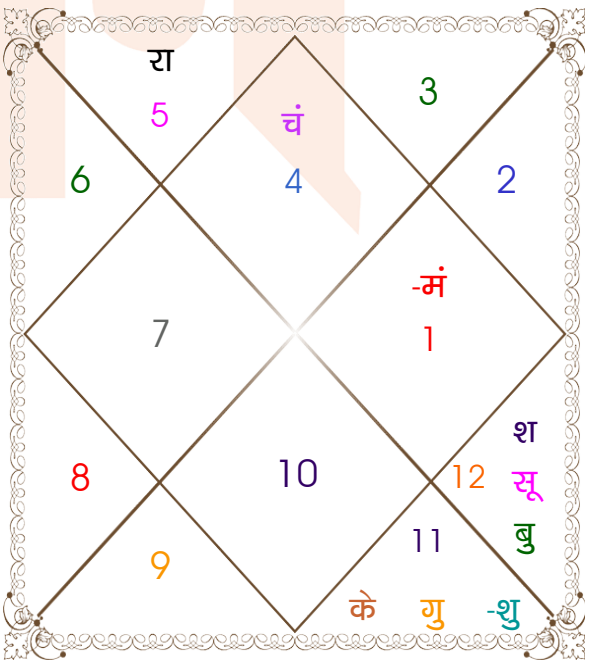

चलित अंश

भाव मध्य		भाव संधि		भाव	भाव संधि		भाव मध्य
मीन	09:43:50	कुंभ	24:30:57	1	कर्क	05:56:54	कर्क 21:32:24
मेष	09:18:04	मीन	24:30:57	2	सिंह	05:56:54	सिंह 20:21:23
वृष	08:52:19	मेष	24:05:11	3	कन्या	04:45:53	कन्या 19:10:22
मिथु	08:26:33	वृष	23:39:26	4	तुला	03:34:52	तुला 17:59:22
कर्क	08:52:19	मिथु	23:39:26	5	वृश्चि	03:34:52	वृश्चि 19:10:22
सिंह	09:18:04	कर्क	24:05:11	6	धनु	04:45:53	धनु 20:21:23
कन्या	09:43:50	सिंह	24:30:57	7	मक	05:56:54	मक 21:32:24
तुला	09:18:04	कन्या	24:30:57	8	कुंभ	05:56:54	कुंभ 20:21:23
वृश्चि	08:52:19	तुला	24:05:11	9	मीन	04:45:53	मीन 19:10:22
धनु	08:26:33	वृश्चि	23:39:26	10	मेष	03:34:52	मेष 17:59:22
मक	08:52:19	धनु	23:39:26	11	वृष	03:34:52	वृष 19:10:22
कुंभ	09:18:04	मक	24:05:11	12	मिथु	04:45:53	मिथु 20:21:23

तारा चक्र

पू०फाल्गुनी	भरणी	पूर्वाषाढ़ा	**जन्म**	पुष्य	अनुराधा	उ०भाद्रपद
उ०फाल्गुनी	कृतिका	उत्तराषाढ़ा	**सम्पत**	आश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती
हस्त	रोहिणी	श्रवण	**विपत**	मघा	मूल	अश्विनी
चित्रा	मृगशिरा	धनिष्ठा	**क्षेम**	पू०फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	भरणी
स्वाति	आर्द्रा	शतभिषा	**प्रत्यारि**	उ०फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	कृतिका
विशाखा	पुनर्वसु	पू०भाद्रपद	**साधक**	हस्त	श्रवण	रोहिणी
अनुराधा	पुष्य	उ०भाद्रपद	**वध**	चित्रा	धनिष्ठा	मृगशिरा
ज्येष्ठा	आश्लेषा	रेवती	**मित्र**	स्वाति	शतभिषा	आर्द्रा
मूल	मघा	अश्विनी	**अतिमित्र**	विशाखा	पू०भाद्रपद	पुनर्वसु

चलित कुंडली

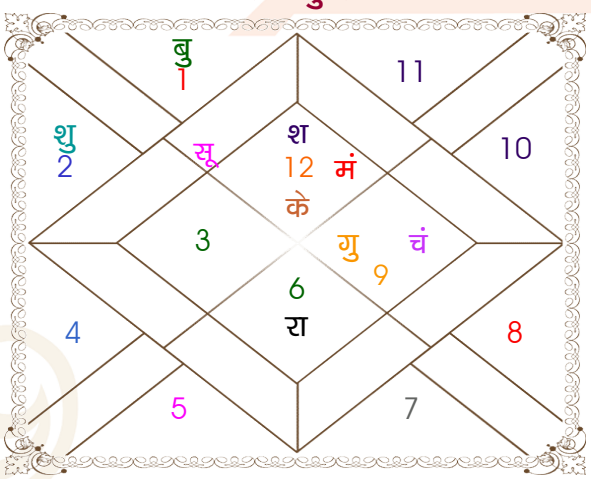

चलित कुंडली

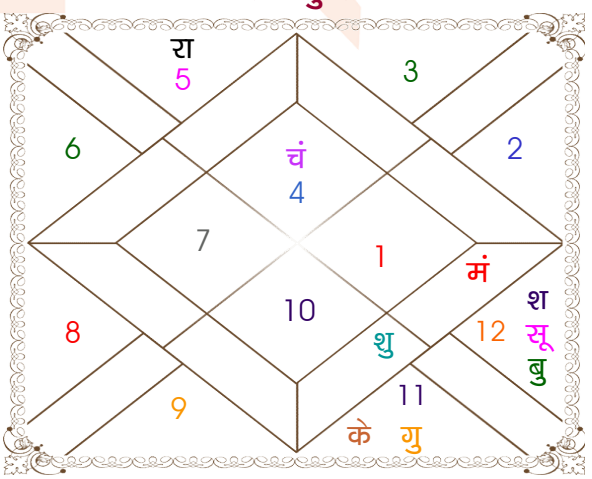

चन्द्र कुंडली

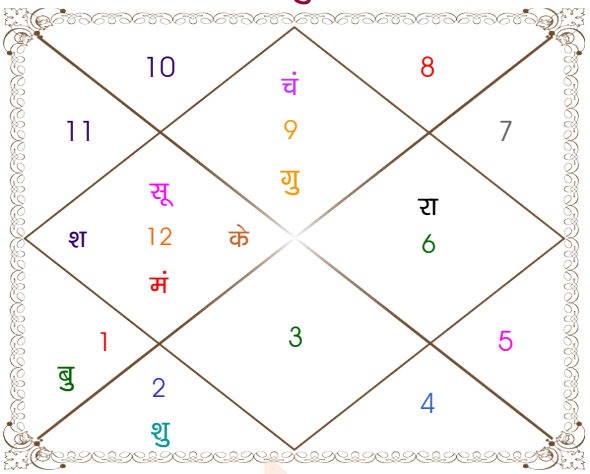

चन्द्र कुंडली

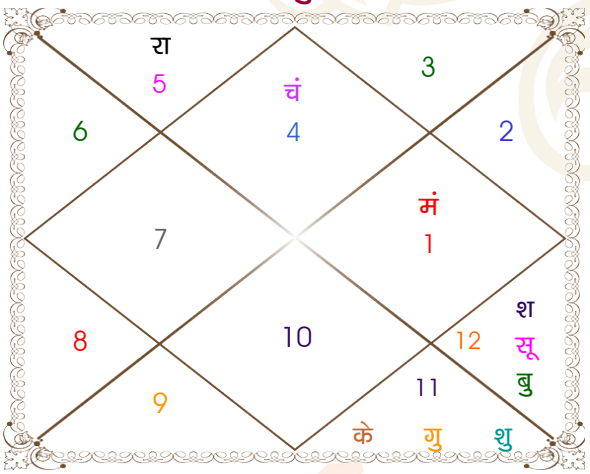

सूर्य कुंडली

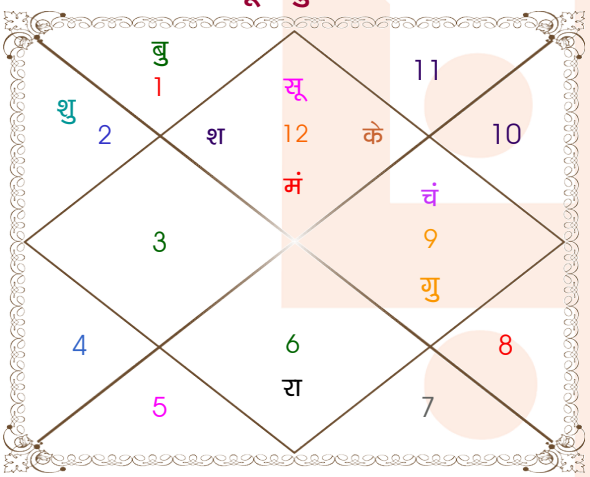

सूर्य कुंडली

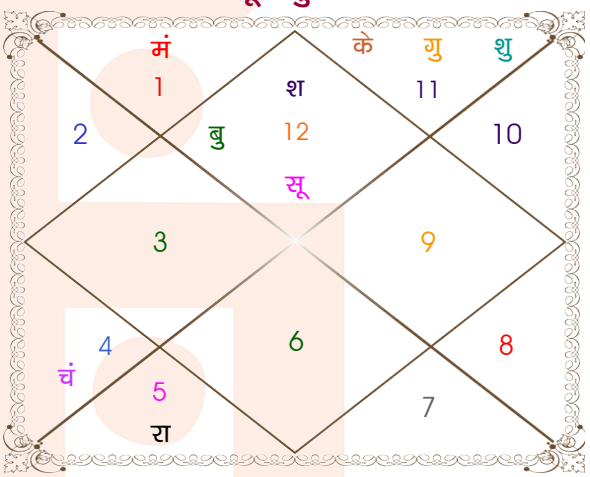

नवमांश कुंडली

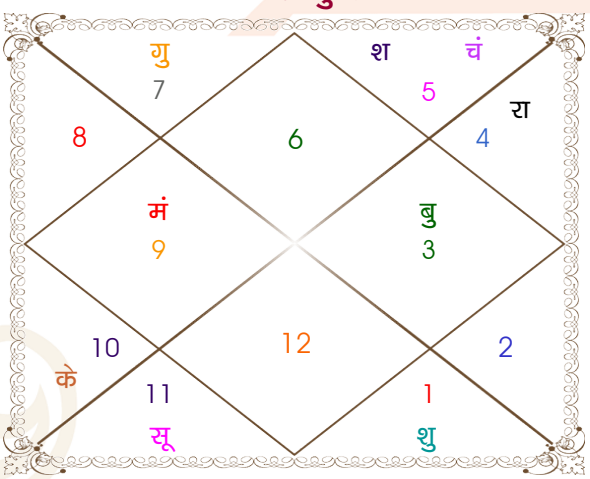

नवमांश कुंडली

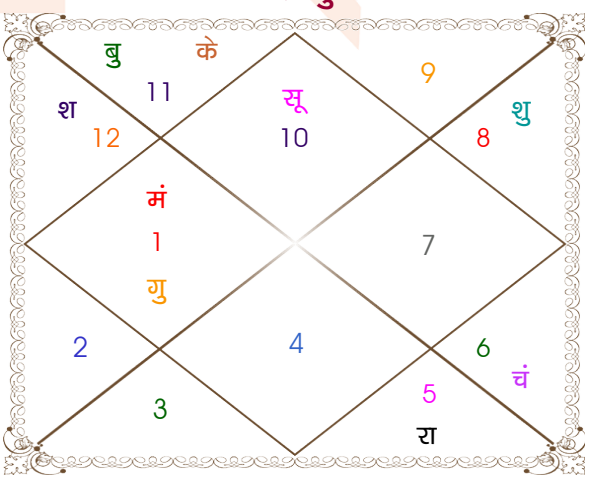

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

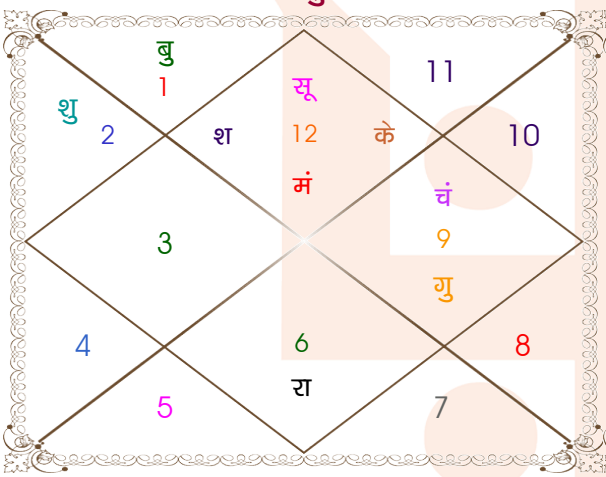

देह विचारः

लग्न कुंडली

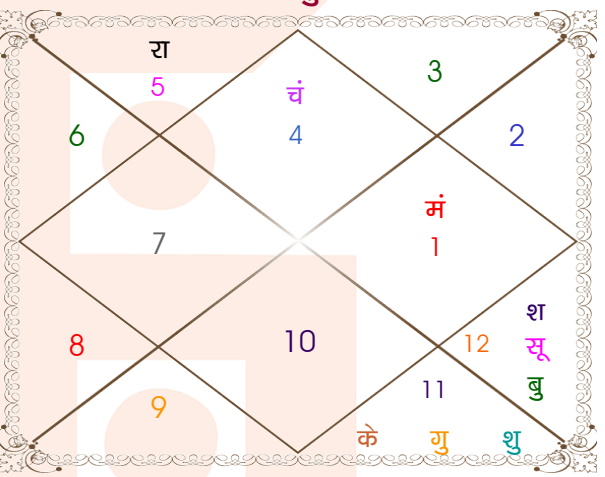

देह विचारः

होरा कुंडली

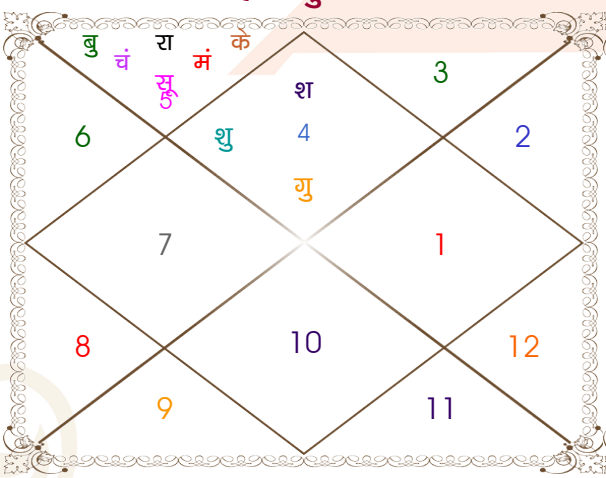

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

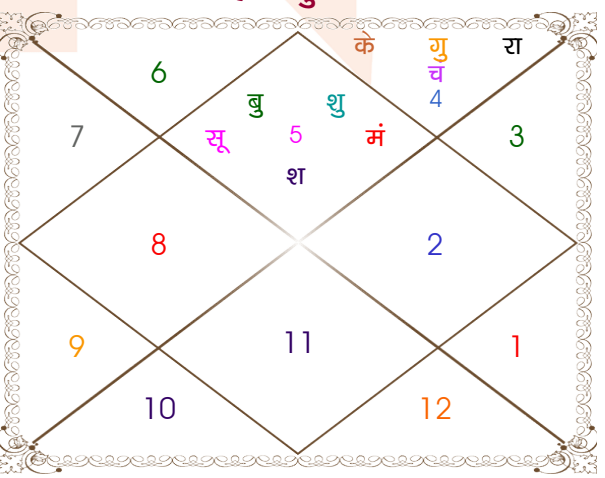

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

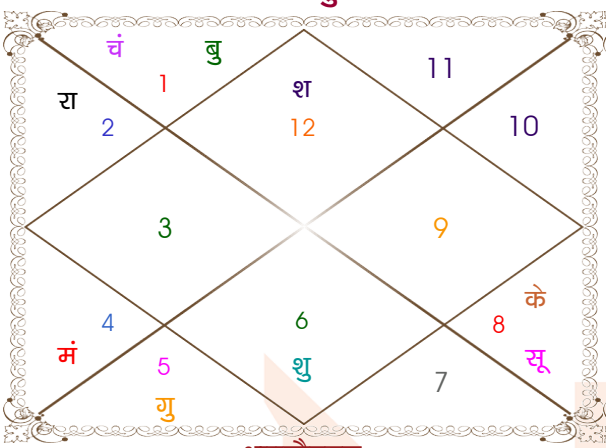

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

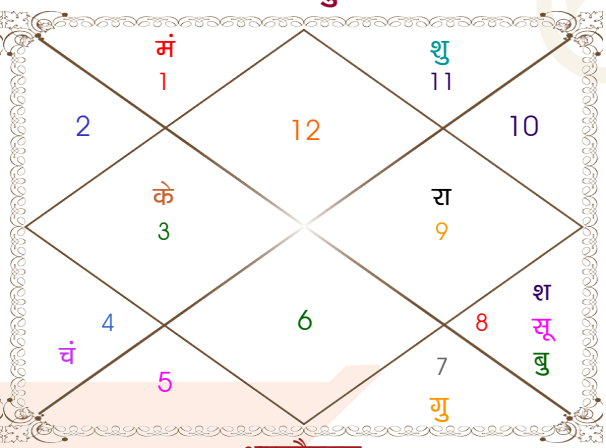

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

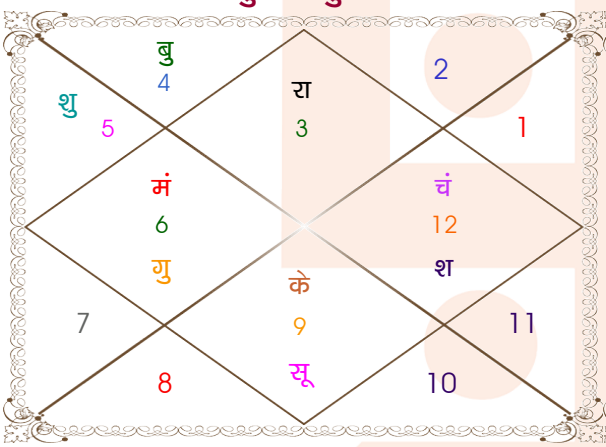

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

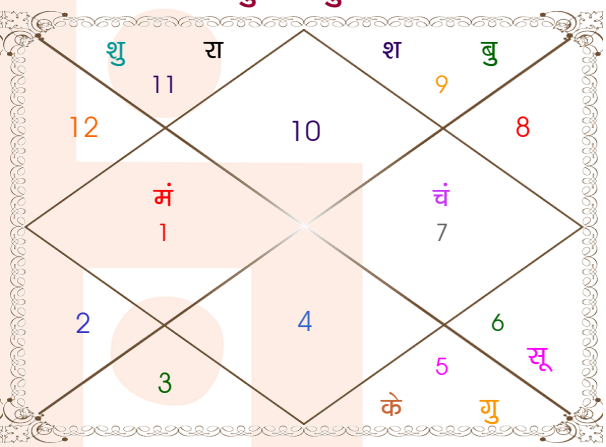

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

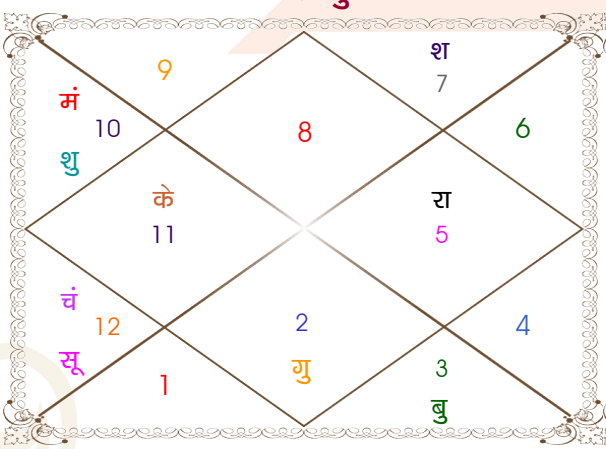

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

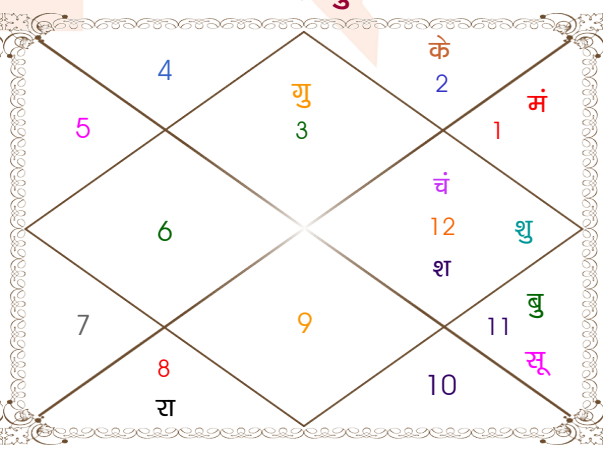

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

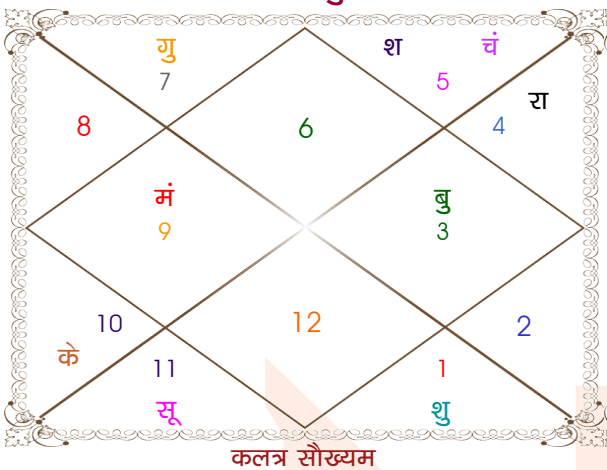

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

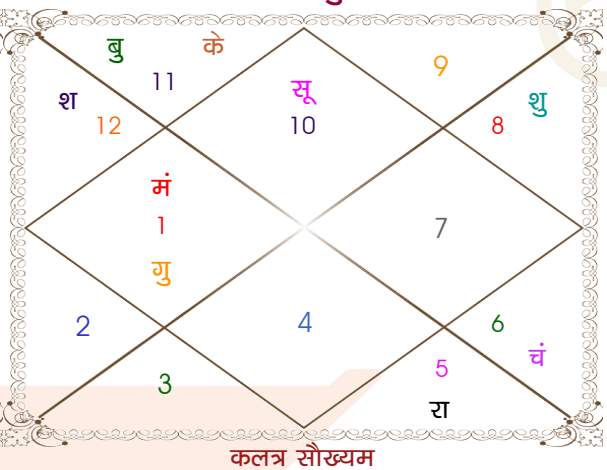

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

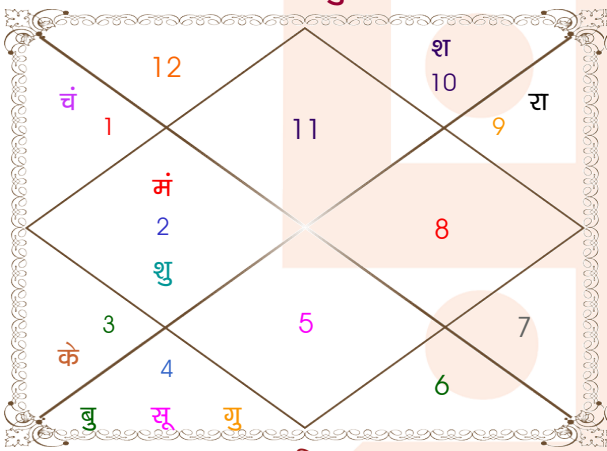

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

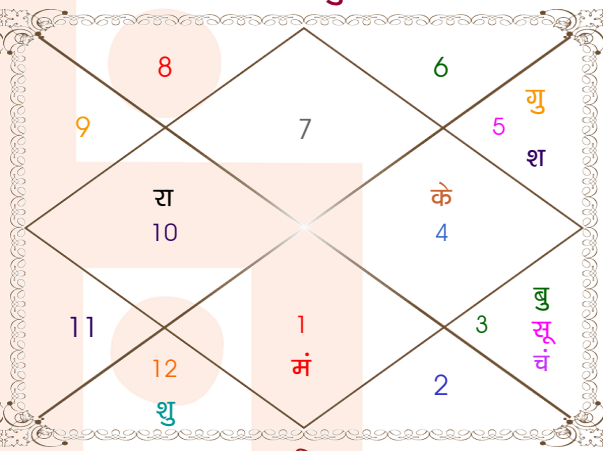

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

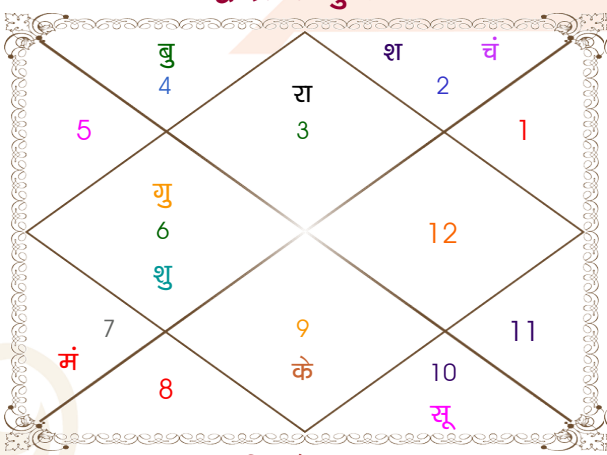

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

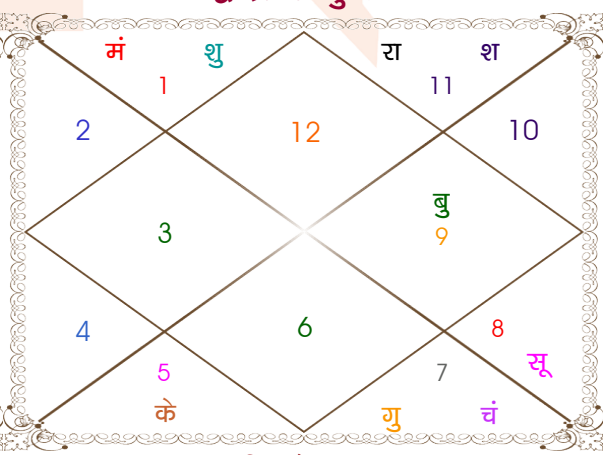

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

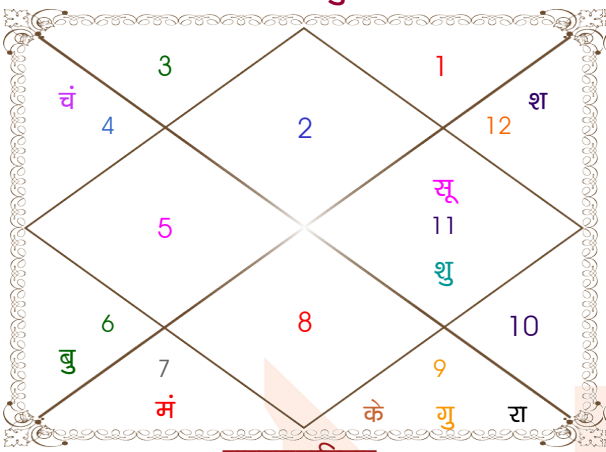

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

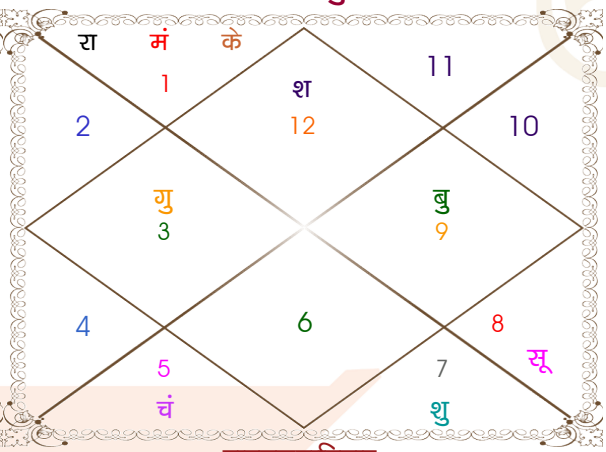

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

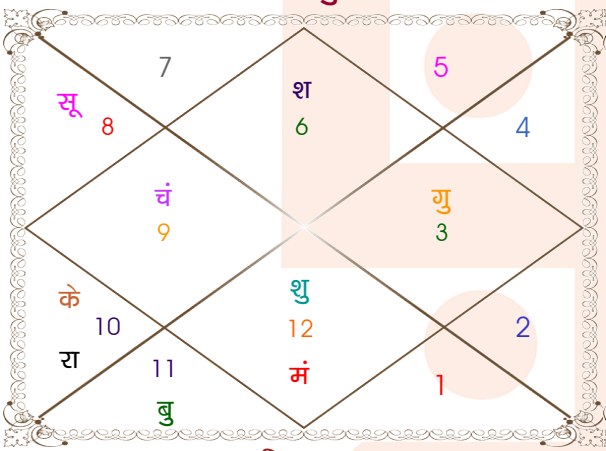

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

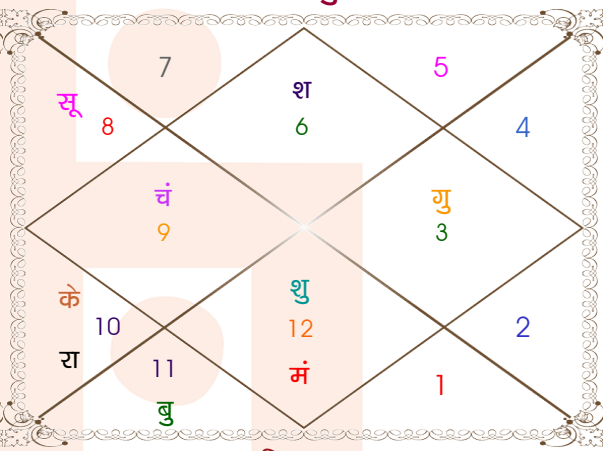

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

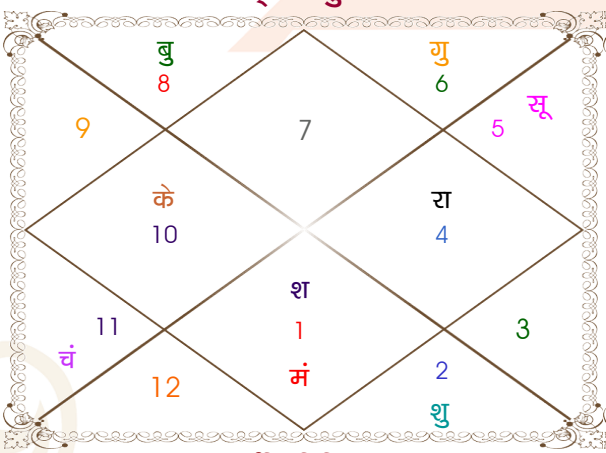

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

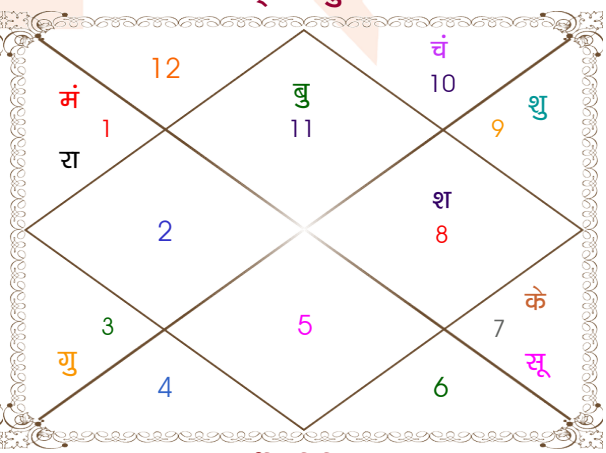

सर्वास्थितिविचारः

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 19 वर्ष 8 मास 7 दिन

के.पी. अयनांश : 23:42:04

फॉरच्युना : वृश्चिक 26:41:02

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	26:41:37	गुरु	बुध	गुरु	बुध
चंद्र		धनु	13:32:30	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
मंगल		मीन	18:57:58	गुरु	बुध	केतु	राहु
बुध		मेष	09:54:29	मंगल	केतु	शनि	बुध
गुरु		धनु	23:01:04	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य
शुक्र		वृष	12:13:46	शुक्र	चंद्र	राहु	गुरु
शनि		मीन	06:36:47	गुरु	शनि	बुध	राहु
राहु	व	कन्या	23:25:33	बुध	मंगल	मंगल	राहु
केतु	व	मीन	23:25:33	गुरु	बुध	मंगल	राहु
हर्ष		मक	10:32:23	शनि	चंद्र	चंद्र	शनि
नेप		मक	03:56:52	शनि	सूर्य	शनि	शुक्र
प्लूटो	व	वृश्चि	09:04:41	मंगल	शनि	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	09:50:09	गुरु	शनि	शुक्र	शनि
2	मेष	16:59:28	मंगल	शुक्र	चंद्र	बुध
3	वृष	14:49:21	शुक्र	चंद्र	गुरु	शुक्र
4	मिथु	08:32:51	बुध	राहु	राहु	चंद्र
5	कर्क	02:35:08	चंद्र	गुरु	राहु	केतु
6	सिंह	01:24:39	सूर्य	केतु	शुक्र	चंद्र
7	कन्या	09:50:09	बुध	सूर्य	शुक्र	बुध
8	तुला	16:59:28	शुक्र	राहु	शुक्र	शनि
9	वृश्चि	14:49:21	मंगल	शनि	राहु	मंगल
10	धनु	08:32:51	गुरु	केतु	गुरु	शुक्र
11	मक	02:35:08	शनि	सूर्य	गुरु	चंद्र
12	कुंभ	01:24:39	शनि	मंगल	बुध	गुरु

भाव कुंडली

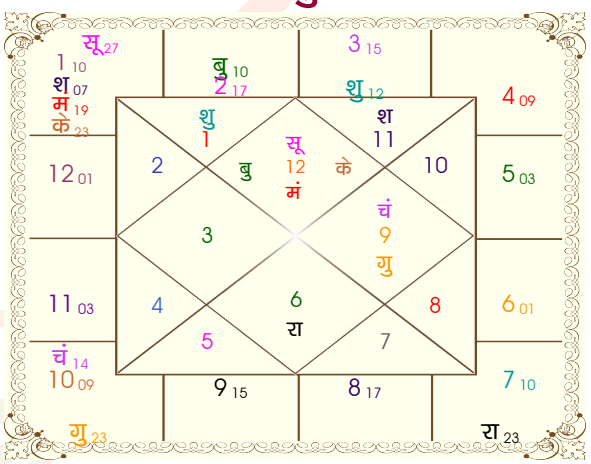

भोग्य दशा काल : शनि 10 वर्ष 7 मास 9 दिन

के.पी. अयनांश : 23:43:43

फॉरच्युना : वृश्चिक 09:14:39

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	21:37:12	गुरु	बुध	सूर्य	चंद्र
चंद्र		कर्क	09:13:20	चंद्र	शनि	शुक्र	राहु
मंगल		मेष	00:29:38	मंगल	केतु	केतु	गुरु
बुध	व	मीन	23:59:19	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र
गुरु		कुंभ	20:26:03	शनि	गुरु	गुरु	शनि
शुक्र		कुंभ	05:20:52	शनि	मंगल	सूर्य	बुध
शनि		मीन	28:35:16	गुरु	बुध	शनि	केतु
राहु		सिंह	16:21:12	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मंगल
केतु		कुंभ	16:21:12	शनि	राहु	शुक्र	गुरु
हर्ष		मक	18:17:28	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
नेप		मक	08:12:09	शनि	सूर्य	शुक्र	सूर्य
प्लूटो	व	वृश्चि	14:09:36	मंगल	शनि	राहु	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	21:38:32	चंद्र	बुध	सूर्य	चंद्र
2	सिंह	16:44:28	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शनि
3	कन्या	15:47:26	बुध	चंद्र	शनि	शनि
4	तुला	18:05:29	शुक्र	राहु	सूर्य	शुक्र
5	वृश्चि	20:59:34	मंगल	बुध	शुक्र	शनि
6	धनु	22:19:54	गुरु	शुक्र	शनि	बुध
7	मक	21:38:32	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरु
8	कुंभ	16:44:28	शनि	राहु	शुक्र	शनि
9	मीन	15:47:26	गुरु	शनि	गुरु	शुक्र
10	मेष	18:05:29	मंगल	शुक्र	मंगल	चंद्र
11	वृष	20:59:34	शुक्र	चंद्र	शुक्र	चंद्र
12	मिथु	22:19:54	बुध	गुरु	शनि	बुध

भाव कुंडली

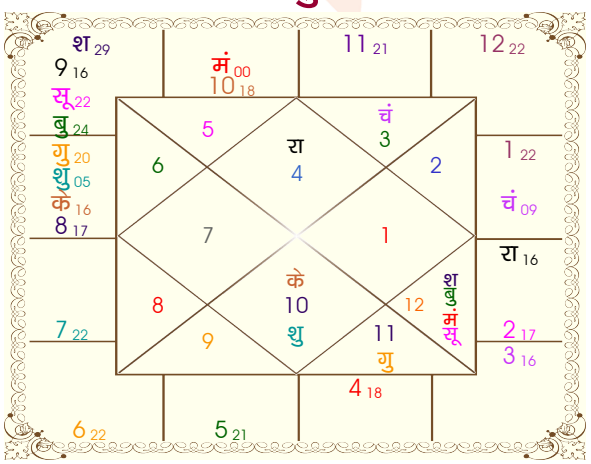

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य+ मंगल+ बुध+ गुरु- राहु, केतु+
2	चंद्र, मंगल- गुरु, शुक्र, राहु-
3	चंद्र- गुरु- शुक्र-
4	सूर्य- मंगल- बुध- केतु-
5	चंद्र- शुक्र-
6	सूर्य-
7	सूर्य- मंगल- बुध- राहु, केतु-
8	चंद्र- गुरु- शुक्र-
9	मंगल- राहु-
10	चंद्र, गुरु, शुक्र,
11	शनि,
12	शनि+

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- राहु, केतु,
2	सूर्य-
3	सूर्य- बुध, शनि-
4	शुक्र- राहु-
5	मंगल- शुक्र-
6	गुरु,
7	चंद्र- मंगल, शुक्र, शनि- राहु, केतु,
8	चंद्र- गुरु+ शनि-
9	सूर्य+ चंद्र, मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र, शनि+
10	मंगल- शुक्र-
11	शुक्र- राहु-
12	सूर्य- चंद्र, बुध, शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1+ 4- 6- 7-
चंद्र	2, 3- 5- 8- 10,
मंगल	1+ 2- 4- 7- 9-
बुध	1+ 4- 7-
गुरु	1- 2, 3- 8- 10,
शुक्र	2, 3- 5- 8- 10,
शनि	11, 12+
राहु	1, 2- 7, 9-
केतु	1+ 4- 7-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 3- 9+ 12-
चंद्र	1- 7- 8- 9, 12,
मंगल	5- 7, 9, 10-
बुध	3, 9+ 12,
गुरु	6, 8+ 9,
शुक्र	4- 5- 7, 9, 10- 11-
शनि	3- 7- 8- 9+ 12-
राहु	1, 4- 7, 11-
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

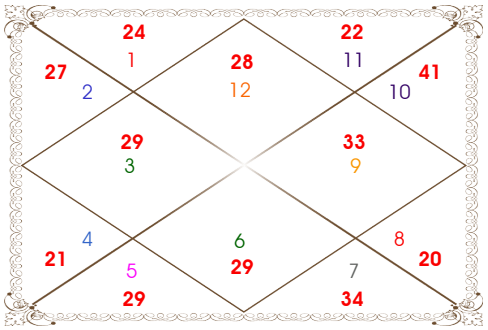

सर्वाष्टकवर्ग

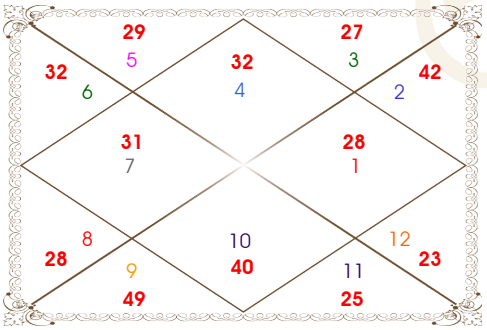

Bhuvaneswar

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	2	2	3	2	4	2	4	5	3	4	39
गुरु	5	3	6	4	4	6	5	2	5	7	4	5	56
मंगल	2	4	3	1	3	4	5	2	5	4	2	4	39
सूर्य	5	3	5	0	3	5	6	4	5	5	3	4	48
शुक्र	3	4	5	5	5	3	5	4	4	6	5	3	52
बुध	4	3	5	4	4	5	5	4	5	7	2	6	54
चंद्र	2	5	3	5	7	4	4	2	5	7	3	2	49
बिन्दु	24	27	29	21	29	29	34	20	33	41	22	28	337
रेखा	32	29	27	35	27	27	22	36	23	15	34	28	335

Hema

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	5	6	6	1	4	4	3	1	7	4	4	4	49
सूर्य	5	4	4	4	2	4	5	4	7	5	2	2	48
चंद्र	3	8	3	3	5	6	3	2	7	6	2	1	49
मंगल	2	5	1	6	2	4	2	3	6	6	1	1	39
बुध	5	5	2	5	4	3	5	4	7	5	6	3	54
गुरु	5	6	3	5	5	2	4	7	5	5	3	6	56
शुक्र	1	5	5	4	4	5	6	6	4	3	5	4	52
शनि	2	3	3	4	3	4	3	1	6	6	2	2	39
बिन्दु	28	42	27	32	29	32	31	28	49	40	25	23	386
रेखा	36	22	37	32	35	32	33	36	15	24	39	41	382

शोध्य पिंड - Bhuvaneswar

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	127	114	110	92	108	70	84
ग्रह पिंड	112	52	99	51	74	22	72
शोध्य पिंड	239	166	209	143	182	92	156

शोध्य पिंड - Hema

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	98	116	97	82	120	60	100	65
ग्रह पिंड	70	34	10	25	86	15	0	30
शोध्य पिंड	168	150	107	107	206	75	100	95

विंशोत्तरी दशा

शुक्र 19 वर्ष 10 मास 4 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
10/04/1996		13/02/2016		13/02/2022	
13/02/2016		13/02/2022		13/02/2032	
शुक्र	15/06/1999	सूर्य	02/06/2016	चंद्र	14/12/2022
सूर्य	14/06/2000	चंद्र	01/12/2016	मंगल	15/07/2023
चंद्र	13/02/2002	मंगल	08/04/2017	राहु	13/01/2025
मंगल	15/04/2003	राहु	03/03/2018	गुरु	15/05/2026
राहु	15/04/2006	गुरु	20/12/2018	शनि	14/12/2027
गुरु	14/12/2008	शनि	02/12/2019	बुध	15/05/2029
शनि	13/02/2012	बुध	08/10/2020	केतु	14/12/2029
बुध	14/12/2014	केतु	12/02/2021	शुक्र	15/08/2031
केतु	13/02/2016	शुक्र	13/02/2022	सूर्य	13/02/2032

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
13/02/2032		13/02/2039		12/02/2057	
13/02/2039		12/02/2057		12/02/2073	
मंगल	11/07/2032	राहु	26/10/2041	गुरु	03/04/2059
राहु	30/07/2033	गुरु	21/03/2044	शनि	14/10/2061
गुरु	06/07/2034	शनि	26/01/2047	बुध	20/01/2064
शनि	15/08/2035	बुध	14/08/2049	केतु	26/12/2064
बुध	11/08/2036	केतु	02/09/2050	शुक्र	27/08/2067
केतु	07/01/2037	शुक्र	01/09/2053	सूर्य	14/06/2068
शुक्र	09/03/2038	सूर्य	27/07/2054	चंद्र	14/10/2069
सूर्य	15/07/2038	चंद्र	26/01/2056	मंगल	20/09/2070
चंद्र	13/02/2039	मंगल	12/02/2057	राहु	12/02/2073

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
12/02/2073		13/02/2092		13/02/2109	
13/02/2092		13/02/2109		14/02/2116	
शनि	16/02/2076	बुध	12/07/2094	केतु	13/07/2109
बुध	26/10/2078	केतु	09/07/2095	शुक्र	12/09/2110
केतु	05/12/2079	शुक्र	09/05/2098	सूर्य	18/01/2111
शुक्र	04/02/2083	सूर्य	15/03/2099	चंद्र	19/08/2111
सूर्य	17/01/2084	चंद्र	15/08/2100	मंगल	15/01/2112
चंद्र	17/08/2085	मंगल	12/08/2101	राहु	01/02/2113
मंगल	26/09/2086	राहु	29/02/2104	गुरु	08/01/2114
राहु	02/08/2089	गुरु	06/06/2106	शनि	17/02/2115
गुरु	13/02/2092	शनि	13/02/2109	बुध	14/02/2116

शनि 10 वर्ष 9 मास 1 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
05/04/1998		05/01/2009		05/01/2026	
05/01/2009		05/01/2026		05/01/2033	
	00/00/0000	बुध	04/06/2011	केतु	03/06/2026
	00/00/0000	केतु	31/05/2012	शुक्र	04/08/2027
	05/04/1998	शुक्र	01/04/2015	सूर्य	09/12/2027
शुक्र	28/12/1999	सूर्य	05/02/2016	चंद्र	09/07/2028
सूर्य	09/12/2000	चंद्र	07/07/2017	मंगल	06/12/2028
चंद्र	10/07/2002	मंगल	04/07/2018	राहु	24/12/2029
मंगल	19/08/2003	राहु	20/01/2021	गुरु	30/11/2030
राहु	25/06/2006	गुरु	28/04/2023	शनि	09/01/2032
गुरु	05/01/2009	शनि	05/01/2026	बुध	05/01/2033

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
05/01/2033		05/01/2053		06/01/2059	
05/01/2053		06/01/2059		05/01/2069	
शुक्र	07/05/2036	सूर्य	25/04/2053	चंद्र	06/11/2059
सूर्य	07/05/2037	चंद्र	24/10/2053	मंगल	06/06/2060
चंद्र	06/01/2039	मंगल	01/03/2054	राहु	06/12/2061
मंगल	07/03/2040	राहु	24/01/2055	गुरु	07/04/2063
राहु	07/03/2043	गुरु	12/11/2055	शनि	05/11/2064
गुरु	05/11/2045	शनि	24/10/2056	बुध	07/04/2066
शनि	05/01/2049	बुध	30/08/2057	केतु	06/11/2066
बुध	06/11/2051	केतु	05/01/2058	शुक्र	06/07/2068
केतु	05/01/2053	शुक्र	06/01/2059	सूर्य	05/01/2069

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
05/01/2069		06/01/2076		05/01/2094	
06/01/2076		05/01/2094		06/01/2110	
मंगल	03/06/2069	राहु	18/09/2078	गुरु	23/02/2096
राहु	22/06/2070	गुरु	11/02/2081	शनि	06/09/2098
गुरु	29/05/2071	शनि	19/12/2083	बुध	13/12/2100
शनि	06/07/2072	बुध	07/07/2086	केतु	19/11/2101
बुध	04/07/2073	केतु	25/07/2087	शुक्र	20/07/2104
केतु	30/11/2073	शुक्र	25/07/2090	सूर्य	08/05/2105
शुक्र	30/01/2075	सूर्य	19/06/2091	चंद्र	07/09/2106
सूर्य	07/06/2075	चंद्र	18/12/2092	मंगल	14/08/2107
चंद्र	06/01/2076	मंगल	05/01/2094	राहु	06/01/2110

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
13/01/2025		15/05/2026		14/12/2027	
15/05/2026		14/12/2027		15/05/2029	
गुरु	19/03/2025	शनि	15/08/2026	बुध	26/02/2028
शनि	04/06/2025	बुध	05/11/2026	केतु	27/03/2028
बुध	12/08/2025	केतु	08/12/2026	शुक्र	21/06/2028
केतु	09/09/2025	शुक्र	15/03/2027	सूर्य	17/07/2028
शुक्र	30/11/2025	सूर्य	13/04/2027	चंद्र	29/08/2028
सूर्य	24/12/2025	चंद्र	31/05/2027	मंगल	28/09/2028
चंद्र	03/02/2026	मंगल	03/07/2027	राहु	15/12/2028
मंगल	03/03/2026	राहु	28/09/2027	गुरु	22/02/2029
राहु	15/05/2026	गुरु	14/12/2027	शनि	15/05/2029

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
05/01/2026		03/06/2026		04/08/2027	
03/06/2026		04/08/2027		09/12/2027	
केतु	14/01/2026	शुक्र	13/08/2026	सूर्य	10/08/2027
शुक्र	08/02/2026	सूर्य	04/09/2026	चंद्र	21/08/2027
सूर्य	15/02/2026	चंद्र	09/10/2026	मंगल	28/08/2027
चंद्र	28/02/2026	मंगल	03/11/2026	राहु	16/09/2027
मंगल	08/03/2026	राहु	06/01/2027	गुरु	03/10/2027
राहु	31/03/2026	गुरु	04/03/2027	शनि	24/10/2027
गुरु	20/04/2026	शनि	10/05/2027	बुध	11/11/2027
शनि	13/05/2026	बुध	10/07/2027	केतु	18/11/2027
बुध	03/06/2026	केतु	04/08/2027	शुक्र	09/12/2027

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
15/05/2029		14/12/2029		15/08/2031	
14/12/2029		15/08/2031		13/02/2032	
केतु	27/05/2029	शुक्र	25/03/2030	सूर्य	24/08/2031
शुक्र	02/07/2029	सूर्य	25/04/2030	चंद्र	08/09/2031
सूर्य	12/07/2029	चंद्र	14/06/2030	मंगल	19/09/2031
चंद्र	30/07/2029	मंगल	20/07/2030	राहु	16/10/2031
मंगल	12/08/2029	राहु	19/10/2030	गुरु	09/11/2031
राहु	12/09/2029	गुरु	08/01/2031	शनि	08/12/2031
गुरु	11/10/2029	शनि	15/04/2031	बुध	03/01/2032
शनि	14/11/2029	बुध	10/07/2031	केतु	14/01/2032
बुध	14/12/2029	केतु	15/08/2031	शुक्र	13/02/2032

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
09/12/2027		09/07/2028		06/12/2028	
09/07/2028		06/12/2028		24/12/2029	
चंद्र	27/12/2027	मंगल	18/07/2028	राहु	01/02/2029
मंगल	09/01/2028	राहु	10/08/2028	गुरु	24/03/2029
राहु	10/02/2028	गुरु	29/08/2028	शनि	24/05/2029
गुरु	09/03/2028	शनि	22/09/2028	बुध	17/07/2029
शनि	12/04/2028	बुध	13/10/2028	केतु	09/08/2029
बुध	12/05/2028	केतु	22/10/2028	शुक्र	12/10/2029
केतु	24/05/2028	शुक्र	16/11/2028	सूर्य	31/10/2029
शुक्र	29/06/2028	सूर्य	23/11/2028	चंद्र	02/12/2029
सूर्य	09/07/2028	चंद्र	06/12/2028	मंगल	24/12/2029

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
13/02/2032		11/07/2032		30/07/2033	
11/07/2032		30/07/2033		06/07/2034	
मंगल	22/02/2032	राहु	07/09/2032	गुरु	13/09/2033
राहु	15/03/2032	गुरु	28/10/2032	शनि	06/11/2033
गुरु	04/04/2032	शनि	28/12/2032	बुध	25/12/2033
शनि	28/04/2032	बुध	20/02/2033	केतु	13/01/2034
बुध	19/05/2032	केतु	14/03/2033	शुक्र	11/03/2034
केतु	28/05/2032	शुक्र	17/05/2033	सूर्य	28/03/2034
शुक्र	21/06/2032	सूर्य	06/06/2033	चंद्र	26/04/2034
सूर्य	29/06/2032	चंद्र	07/07/2033	मंगल	16/05/2034
चंद्र	11/07/2032	मंगल	30/07/2033	राहु	06/07/2034

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
24/12/2029		30/11/2030		09/01/2032	
30/11/2030		09/01/2032		05/01/2033	
गुरु	08/02/2030	शनि	02/02/2031	बुध	29/02/2032
शनि	03/04/2030	बुध	31/03/2031	केतु	21/03/2032
बुध	21/05/2030	केतु	24/04/2031	शुक्र	21/05/2032
केतु	10/06/2030	शुक्र	01/07/2031	सूर्य	08/06/2032
शुक्र	06/08/2030	सूर्य	21/07/2031	चंद्र	08/07/2032
सूर्य	23/08/2030	चंद्र	24/08/2031	मंगल	29/07/2032
चंद्र	20/09/2030	मंगल	16/09/2031	राहु	21/09/2032
मंगल	10/10/2030	राहु	16/11/2031	गुरु	09/11/2032
राहु	30/11/2030	गुरु	09/01/2032	शनि	05/01/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
06/07/2034		15/08/2035		11/08/2036	
15/08/2035		11/08/2036		07/01/2037	
शनि	08/09/2034	बुध	05/10/2035	केतु	19/08/2036
बुध	04/11/2034	केतु	26/10/2035	शुक्र	13/09/2036
केतु	28/11/2034	शुक्र	25/12/2035	सूर्य	21/09/2036
शुक्र	03/02/2035	सूर्य	12/01/2036	चंद्र	03/10/2036
सूर्य	24/02/2035	चंद्र	12/02/2036	मंगल	12/10/2036
चंद्र	29/03/2035	मंगल	04/03/2036	राहु	03/11/2036
मंगल	22/04/2035	राहु	27/04/2036	गुरु	23/11/2036
राहु	22/06/2035	गुरु	14/06/2036	शनि	17/12/2036
गुरु	15/08/2035	शनि	11/08/2036	बुध	07/01/2037

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
05/01/2033		07/05/2036		07/05/2037	
07/05/2036		07/05/2037		06/01/2039	
शुक्र	27/07/2033	सूर्य	25/05/2036	चंद्र	27/06/2037
सूर्य	26/09/2033	चंद्र	24/06/2036	मंगल	01/08/2037
चंद्र	05/01/2034	मंगल	16/07/2036	राहु	31/10/2037
मंगल	17/03/2034	राहु	08/09/2036	गुरु	20/01/2038
राहु	16/09/2034	गुरु	27/10/2036	शनि	27/04/2038
गुरु	25/02/2035	शनि	24/12/2036	बुध	22/07/2038
शनि	06/09/2035	बुध	14/02/2037	केतु	27/08/2038
बुध	26/02/2036	केतु	07/03/2037	शुक्र	06/12/2038
केतु	07/05/2036	शुक्र	07/05/2037	सूर्य	06/01/2039

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
07/01/2037		09/03/2038		15/07/2038	
09/03/2038		15/07/2038		13/02/2039	
शुक्र	19/03/2037	सूर्य	15/03/2038	चंद्र	02/08/2038
सूर्य	09/04/2037	चंद्र	26/03/2038	मंगल	14/08/2038
चंद्र	15/05/2037	मंगल	03/04/2038	राहु	15/09/2038
मंगल	09/06/2037	राहु	22/04/2038	गुरु	13/10/2038
राहु	12/08/2037	गुरु	09/05/2038	शनि	16/11/2038
गुरु	07/10/2037	शनि	29/05/2038	बुध	16/12/2038
शनि	14/12/2037	बुध	16/06/2038	केतु	29/12/2038
बुध	12/02/2038	केतु	24/06/2038	शुक्र	02/02/2039
केतु	09/03/2038	शुक्र	15/07/2038	सूर्य	13/02/2039

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
06/01/2039		07/03/2040		07/03/2043	
07/03/2040		07/03/2043		05/11/2045	
मंगल	30/01/2039	राहु	18/08/2040	गुरु	15/07/2043
राहु	04/04/2039	गुरु	11/01/2041	शनि	16/12/2043
गुरु	31/05/2039	शनि	04/07/2041	बुध	02/05/2044
शनि	07/08/2039	बुध	06/12/2041	केतु	28/06/2044
बुध	06/10/2039	केतु	08/02/2042	शुक्र	08/12/2044
केतु	31/10/2039	शुक्र	09/08/2042	सूर्य	25/01/2045
शुक्र	10/01/2040	सूर्य	03/10/2042	चंद्र	16/04/2045
सूर्य	31/01/2040	चंद्र	02/01/2043	मंगल	12/06/2045
चंद्र	07/03/2040	मंगल	07/03/2043	राहु	05/11/2045

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
13/02/2039		26/10/2041		21/03/2044	
26/10/2041		21/03/2044		26/01/2047	
राहु	11/07/2039	गुरु	20/02/2042	शनि	02/09/2044
गुरु	19/11/2039	शनि	09/07/2042	बुध	27/01/2045
शनि	24/04/2040	बुध	10/11/2042	केतु	29/03/2045
बुध	10/09/2040	केतु	31/12/2042	शुक्र	18/09/2045
केतु	07/11/2040	शुक्र	26/05/2043	सूर्य	09/11/2045
शुक्र	20/04/2041	सूर्य	09/07/2043	चंद्र	04/02/2046
सूर्य	08/06/2041	चंद्र	20/09/2043	मंगल	06/04/2046
चंद्र	30/08/2041	मंगल	10/11/2043	राहु	09/09/2046
मंगल	26/10/2041	राहु	21/03/2044	गुरु	26/01/2047

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
05/11/2045		05/01/2049		06/11/2051	
05/01/2049		06/11/2051		05/01/2053	
शनि	08/05/2046	बुध	01/06/2049	केतु	01/12/2051
बुध	18/10/2046	केतु	31/07/2049	शुक्र	10/02/2052
केतु	25/12/2046	शुक्र	19/01/2050	सूर्य	02/03/2052
शुक्र	06/07/2047	सूर्य	12/03/2050	चंद्र	07/04/2052
सूर्य	01/09/2047	चंद्र	06/06/2050	मंगल	01/05/2052
चंद्र	07/12/2047	मंगल	06/08/2050	राहु	04/07/2052
मंगल	12/02/2048	राहु	08/01/2051	गुरु	30/08/2052
राहु	04/08/2048	गुरु	26/05/2051	शनि	06/11/2052
गुरु	05/01/2049	शनि	06/11/2051	बुध	05/01/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	5
3	भाग्यांक	9
1, 4, 8, 9, 3	मित्र अंक	3, 5, 9
5, 6	शत्रु अंक	2, 4, 8
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
सोम, मंगल, गुरु	शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
चन्द्र, मंगल, गुरु	शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मीन, सिंह	मित्र राशि	मीन, मेष
मिथुन, वृश्चिक, मकर	मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
हनुमान	अनुकूल देवता	शिव
पुखराज	शुभ रत्न	मोती
सुनहला, पीला हकीक	शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
मूंगा	भाग्य रत्न	पुखराज
कांसा	शुभ धातु	रजत
पीत	शुभ रंग	श्वेत
पूर्वोत्तर	शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
संध्या	शुभ समय	संध्या
हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प	दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दाल चना	दान अन्न	चावल
घी	दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Bhuvaneswar

जीवन रत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	स्वास्थ्य, धन, भाग्योदय
कारक रत्नः	मोती	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	लहसुनिया	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति

Hema

जीवन रत्नः	मोती	स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पुखराज	दुर्घटना से बचाव, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/04/1996-16/04/1998
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	बदनामी
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसाय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती तृतीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती तृतीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Bhuvaneswar

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Hema

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।

3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	मेष	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	11.50		

कुल : **11.5 / 36**

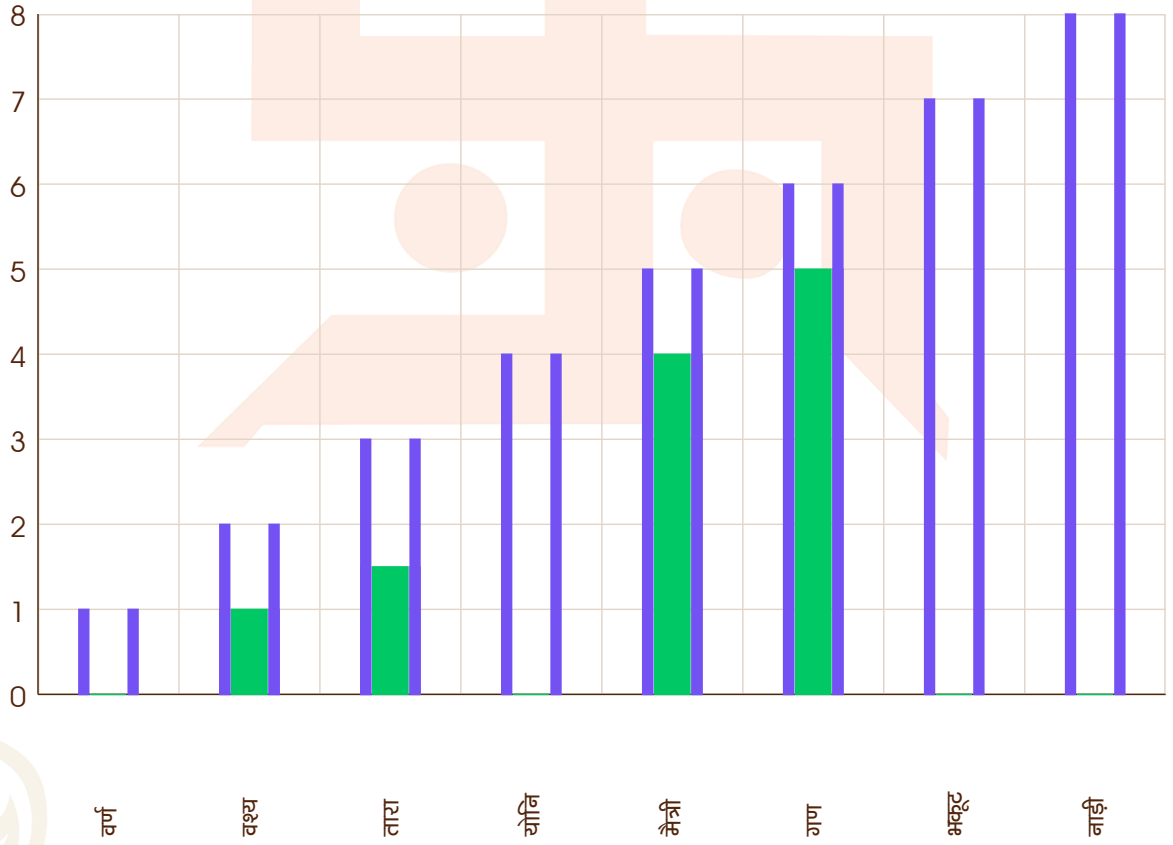

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Hema का नक्षत्र पुष्य है।

Bhuvaneswar का वर्ग मूषक है तथा Hema का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Bhuvaneswar और Hema का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Bhuvaneswar मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Hema मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

Bhuvaneswar तथा Hema में मंगलीक मिलान ठीक नही है।

निष्कर्ष

मंगलीक एवं अष्टकूट गुण न मिलने के कारण दोनों का मिलान बिल्कुल ठीक नहीं हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Bhuvaneswar का वर्ण क्षत्रिय तथा Hema का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही Hema हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना Bhuvaneswar एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

Bhuvaneswar का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Hema का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें Bhuvaneswar एवं Hema दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः Bhuvaneswar Hema पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि Bhuvaneswar हमेश Hema के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

Bhuvaneswar की तारा क्षेम तथा Hema की तारा वध है। Hema की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह Bhuvaneswar एवं Hema दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। Hema अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

Bhuvaneswar की योनि वानर है तथा Hema की योनि मेष है । अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच परस्पर शत्रुता का संबंध है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच अक्सर घरेलू हिंसा होती रहेगी। समय-समय पर एक दूसरे पर आघात भी कर सकते हैं। दोनों के बीच प्रेम एवं सौहार्द का अभाव बना रहेगा। दोनों के बीच परस्पर संदेह की भावना बनी रहगी। वैवाहिक जीवन में स्थिति मुकदमेबाजी तक भी जी सकती है। दोनों के बीच अलगाव की चाह भी हो सकती है। एक घर में रहकर स्थिति तलाक जैसी बनी रह सकती है। परस्पर अविश्वास की भावना के कारण वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है। अतः अपने वैवाहिक जीवन को बचाये रखने के लिए दोनों को परस्पर विश्वास व सहयोग की आवश्यकता है अन्यथा घरेलू हिंसा होने के कारण चोट भी लग सकती है। वैचारिक मतभेदों को बुद्धि बल तथा समझदारी से निपटाना

चाहिये अन्यथा लड़ाई झगड़े से किसी भी समस्या का हल निकाल पाना असंभव है।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Bhuvaneswar का राशि स्वामी Hema के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि Hema का राशि स्वामी Bhuvaneswar के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

Bhuvaneswar का गण मनुष्य तथा Hema का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Hema सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर Bhuvaneswar व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण Bhuvaneswar अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

Bhuvaneswar से Hema की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा Hema से Bhuvaneswar की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। Bhuvaneswar एवं Hema दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। Bhuvaneswar शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर Hema बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

Bhuvaneswar की नाड़ी मध्य है तथा Hema की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से

किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में Bhuvaneswar एवं Hema का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

Bhuvaneswar की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त धनु तथा Hema की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। अग्नि एवं जल में नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण Bhuvaneswar और Hema के परस्पर दाम्पत्य संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन में कठिनाइयां रहेंगी अतः मिलान अच्छा नहीं रहेगा ।

Bhuvaneswar की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा Hema की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं मित्र राशि में स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से Bhuvaneswar और Hema के परस्पर संबंध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं समर्पण के भाव का भी समय समय पर प्रदर्शन करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुख में भी एक दूसरे को हार्दिक सहयोग प्रदान करेंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में सुख का भाव बना रहेगा।

Bhuvaneswar और Hema की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह षडाष्टक भकूट दोष दाम्पत्य जीवन के लिए अशुभ कहलाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा मतभेद एवं विरोध के भाव में वृद्धि होगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। एक दूसरे के प्रति Bhuvaneswar और Hema उपेक्षा का भाव रखेंगे तथा सुख दुःख में सहयोग कम ही प्रदान करेंगे। अतः वैवाहिक जीवन में सुख की अल्पता रहेगी। यदि Bhuvaneswar और Hema सामंजस्य एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य करें तो दुष्प्रभावों में कमी आ सकती है।

Bhuvaneswar का वश्य मानव तथा Hema का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भिन्न रहेंगी। साथ ही काम संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

Bhuvaneswar का वर्ण क्षत्रिय तथा Hema का वर्ण ब्राह्मण है। अतः Bhuvaneswar पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु Hema की प्रवृति शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो में प्रवृत रहेगी। अतः कार्य क्षमता में अंतर से Bhuvaneswar और Hema को परेशानी का सामना करना पड़े सकता है।

धन

Bhuvaneswar और Hema दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन

धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Bhuvaneswar और Hema दोनों की नाड़ी मध्य है। अतः इसके प्रभाव से इनको समय समय पर स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इससे Bhuvaneswar और Hema दोनों को उदर संबंधी कष्ट होगा तथा लीवर से संबंधित परेशानियां भी समय समय पर होती रहेंगी। वे अपच आदि से भी असुविधा की अनुभूति करेंगे। साथ ही मंगल का दुष्प्रभाव Hema के स्वास्थ्य पर रहेगा इसके प्रभाव से इनको धातु या गुप्त रोग अथवा मासिक धर्म संबधी परेशानियां रहेंगी। अतः नाड़ी दोष एवं मंगल के अशुभ प्रभाव के कारण ऐसे मिलान की उपेक्षा करनी चाहिए। तथापि उपरोक्त दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करना शुभ रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Bhuvaneswar और Hema का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Bhuvaneswar और Hema के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Hema के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Hema को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Hema को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Bhuvaneswar और Hema सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Bhuvaneswar और Hema का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Hema के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि Hema धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति

प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से Hema के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी Hema का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी Hema से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

Bhuvaneswar के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Bhuvaneswar अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Bhuvaneswar के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Bhuvaneswar के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

Bhuvaneswar

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील व्यक्ति होंगे। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगे। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगे। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील व्यक्ति रहेंगे। इन गुणों, वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगे। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगे। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आप परोपकारवादी, बहुतों के पोषक बनेंगे। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगे। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगे।

Hema

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट होंगी। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनती हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा। यदि आप साधारण ग्रहस्थ जीवन को अपनाती हैं तो आपका पति उपरोक्त रोजगार का रहेगा तो अच्छा रहेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक् पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगी एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगी जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़ी जल्दबाज एवं फुर्तीली भी रहेंगी। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगी।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगी। इस

कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

Bhuvaneswar

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

Hema

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

Bhuvaneswar

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्शेते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यो का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यो से संबंधित रहते है। यदि आप इस प्रवृति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपकें कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछें भी लौट सकते है। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यों को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरूचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस

विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

Hema

आपका जन्म अश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में कर्क लग्नोदय काल, मकर नवमांश एवं मीन द्रेष्टकाण के उदय काल में हुआ था। आपका जन्म प्रभाव यह सुनिश्चित करता है कि आपकी जो पहुँच है वह आपको जीवन में सफलता प्रदान करेगी। "विश्वसनीयता एक अच्छी नीति है" इस भावनाओं से युक्त होकर, अपने प्रस्तावित कार्य सम्पादन कला के अनुरूप निश्चय ही आप अपने उद्देश्य की सफलता तक पहुँच सकती हैं।

आप अत्यधिक स्वार्थी महिला है। आप दूसरों को प्रलोभन देकर, आप अपनी बांछित अभिलाषा एवं महत्वकांक्षा की पूर्ति हेतु अग्रसर होकर सब को पीछे छोड़ सकती हो। यदि आपको लाभ प्राप्त करना है तो मात्र आप अपने व्यवसाय अथवा व्यवसायिक संगठन का ही नहीं अपितु अपने पारिवारिक सदस्यों को भी हस्तानान्तरित कर सकती हैं। उत्तम तो यह है कि आप सतर्कतापूर्वक अग्रसर हों तथा अविश्वसनीयता के कारण कलंकित न हो।

कर्क राशीय प्रभाव से आप निःसंदेह प्रतिभावान स्त्री हैं। आप तुच्छ से महानता की ओर अग्रसर होकर उत्तम एवं आरामदायक जीवन बताएंगी।

आपमें आवश्यक हानि विद्यमान है तथा आपकी ऐसी क्षमता है कि आप अपने विचारों को अन्य व्यक्तियों को सूचित एवं सम्पर्क स्थापित कर सकती हैं। आप एक प्रतिउत्पन्नमति बुद्धि की विनोद प्रिय महिला हैं तथा आपमें मन भावन विलक्षणता हैं तथा आप संवादपटु अर्थात् सभी समाचारों से अवगत रहने वाली हैं। इस सम्पूर्णता युक्त गुणों के प्रभाव से आप उन्नति प्राप्ति हेतु सकारात्मक गुणों के व्यवहार से अपने जीवन में उच्चस्तरीय उन्नति प्राप्त करेगी। समग्ररूप से संकल्पित होने की शक्ति आपके सर्वांग में निहित है तथा आप कठिन श्रम कर अपने स्पष्ट मार्ग पर चलती रहेंगी।

यदि आप अपना कठोरतापूर्ण जिद्दीपन करना छोड़ दे तथा अति नमनशीलतापूर्ण मुद्रा ग्रहण करें तो आपके बहुत मित्र हो जाएंगे तथा आपके कार्यों को धीरे-धीरे प्रस्तावित करेंगे। आपको सर्वथा उत्तेजनात्मक पदार्थ मद्यपान का त्याग करना पड़ेगा। तत्पश्चात् आप ऐसी

आशा कर सकते हैं कि आप धन सम्पत्ति प्राप्त कर विशेष तथा जीवन के 34 वें वर्ष से सुखद एवं प्रसन्नतम जीवन-व्यतीत करेंगी। आपको पारिवारिक एकता एवं प्रसन्नता हेतु आपने को नियंत्रित रखना जीवन का आवश्यक दायीत्व है।

आपकों श्रेष्टतम एवं अनुकूल जीवन व्यतीत करने के लिए अच्छे पति एवं विवेकशील सन्तान ही शेष अपने जीवन को महानतम एवं विश्वसनीय प्रमाणित कर सकेंगे। आप अपनी अति हठ धर्मिता जैसी प्रवृति में बदलाव लाकर अपनी कमजोरी को त्याग कर उनके साथ स्वाभाविक संबंध कायम रख सकती हैं। आप निश्चयपूर्वक अपनी उत्तेजनात्मक प्रवृति को नियंत्रित करे तथा अपनी आध्यात्मिक प्रवृति का विस्तार करें। जो आपके शेष जीवन व्यतीत करने में सहायक सिद्ध होगा।

सामान्यतः आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परन्तु यह संभाव्य है कि कुछ वर्षों के पश्चात् आप हिस्ट्रीया, पीलिया रोग एवं पेट संबंधी गड़बड़ी जैसे रोगो से आक्रान्त हो सकती हैं। यदि आप अपने जीवन में थोड़ी भी उदासीनता नहीं चाहती हैं। इसीलिए भविष्य काल की आरोग्यता हेतु, आपको सतर्कता पूर्वक जीवन पथ पर चलना चाहिए।

आपकी मनोवृति के अनुसार आपके लिए अनुकूल कार्य/व्यवसायों में ट्रेवल्स ऐजेंसी, भ्रमणशील निर्देशक (गाईड) विक्रय प्रतिनिधि तथा इस प्रकार के कार्यों से संबंधित रूचिकर व्यवसाय आदि उत्तम रहेगा। आप में ऐसी गुणवत्ता विद्यमान है कि आप अपनी तेजस्विता के प्रभाव से जनसम्पर्क एवं बातचीत कर सिद्धहस्त हो सकेंगी।

आपका भाग्यशाली रंग लाल, पीला, क्रीम रंग एवं सफेद रंग है। आपको नीला एवं हरे रंग का सर्वथा त्याग करना चाहिए।

आपके लिए अनुकूल अंक 4 एवं 6 अंक है। अंक 3 एवं 5 अंक ये आपके लिए अनुकूल नहीं है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

Bhuvaneswar

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भु" या "भू" अक्षर से होगा यथा- भूदेव।

आप अपने जीवन काल में समस्त सुखैश्वर्य का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रशंसनीय रहेगी तथा इसी प्रिय एवं मधुरवाणी का आप अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे। आपका चरित्र निर्मल तथा अनुकरणीय रहेगा। साथ ही धन दौलत का आपके पास सामान्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में बार बार जल पीने की इच्छा जागृत होती रहेगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

आपको सर्वप्रकार से आनन्द तथा सुख प्रदान करने वाली पत्नी की प्राप्ति होगी अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही आनन्द एवं सुखपूर्वक व्यतीत होगा। समाज में आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय व्यक्ति समझे जाएंगे। आप किसी अन्य से स्थिर मित्रता करना पसन्द करेंगे। अतः आपके अधिकांश मित्र बुद्धिमान तथा गुणवान रहेंगे। साथ ही आपके पास ऐश्वर्य एवं वैभव भी स्थिर मात्रा में ही रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

आपके अर्न्तमन में अन्य जनों के उपकार करने की भावना सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा अपने स्वजनों के अतिरिक्त अन्य जनों के उपकार करने के लिए भी आप सदैव तत्पर रहेंगे। अतः ऐसे कार्यों से आपका समाजिक सम्मान निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहेगा। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा अपने सौभाग्य से ही अनेक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप की बुद्धि भी अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी तथा अधिकांश शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के कार्यों को करने में भी आप निपुण रहेंगे। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रिय भी रहेंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।

मानसागरी

आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा समाज में सर्वप्रकार के मान सम्मान से युक्त रहेंगे। आपकी मुख्य विशेषता रह रहेगी कि आपके हृदय में स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी अनावश्यक रूप से आप कभी भी उत्तेजित नहीं होंगे तथा संकट काल में भी बुद्धि तथा धैर्य का अवलम्बन करके शान्ति एवं सहनशीलता के भाव का यत्नपूर्वक जीवन में पालन करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

Hema

आप पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई है। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ण विप्र, गण देव, वर्ग मेष तथा योनि मेष होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "हे" अक्षर से प्रारम्भ होगा। हेमलता।

आप देवताओं की पूजा से प्राप्त धन से युक्त रहेंगी। नाना प्रकार के शास्त्रों की आप ज्ञान रखने वाली होंगी तथा बुद्धिमती भी होंगी। आपके समस्त कार्य बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सफल होंगे। देखने में आप सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति होंगी अतः सभी लोगों की प्रिय रहेंगी। आपकी प्रकृति कफ से युक्त होगी तथा अपने पूर्ण जीवन काल में आप समस्त सुखों का उपभोग करने वाली होंगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

आप धर्म कर्म तथा ईश्वर में पूर्ण रूप से आस्था तथा श्रद्धा अर्पण करेंगी। आपका हृदय भी शान्त रहेगा एवं चंचलता का अभाव रहेगा। आपके अधिकांश कार्य शान्त चित्त से ही सुसम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आपको पुत्रों का सहयोग भी प्राप्त होगा।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

ब्राहमण तथा देवताओं की आप तन, मन, धन से सेवा करने वाली होंगी। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा धनाढ्य कहलाएंगी। आप उच्चाधिकारियों की प्रिय होंगी तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप बन्धु वर्ग से भी युक्त रहेंगी तथा उन्से परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ एवं हृदय हमेशा प्रसन्नता से परिपूर्ण रहेगा। माता पिता अथवा सास ससुर की आप पूर्ण रूप से सेवा करेंगी तथा उनके प्रति अपने कर्तव्य का हमेशा पालन करेंगी। आपका व्यवहार समाज में विनम्रता से युक्त रहेगा। अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपको अपने जीवन में नाना प्रकार के सुखों, सम्पतियों, द्रव्यों तथा वाहनों का स्वामित्व भी प्राप्त होगा।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

Bhuvaneswar

धनु राशि में जन्म होने के कारण आपकी मुखाकृति तथा कण्ठभाग दीर्घता से युक्त रहेगे। आपके कान, ओंठ तथा दान्तों में भी स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही आपकी भुजाएं भी पुष्ट रहेगी। आपको पिता द्वारा अर्जित धन की पूर्ण रूपेण प्राप्ति होगी तथा इससे आप समृद्ध रहेंगे। आपकी दानशीलता की प्रवृति भी रहेगी। अतः समय समय पर यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में पूर्ण रूचि रखेंगे। अतः काव्यादि सृजन में ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अतः शरीर में बल का अभाव नहीं होगा। आप उच्च श्रेणी के वक्ता होंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों से अन्य जनों को पूर्ण रूपेण प्रभावित करने में सफल रहेंगे। सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में विद्यमान रहेगी। चित्रकारी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसमें आप विशेष योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे। आप गम्भीर प्रवृति से युक्त होकर धर्म के विषय में विस्तृत ज्ञान भी रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके संबंध सामान्य ही रहेगे। इसके अतिरिक्त आप से बलपूर्वक कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करवाया जा सकेगा। आप केवल प्रेम तथा सम्मान से ही कार्य करेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोल तथा सुन्दर रहेंगी एवं हाथ की लम्बाई भी सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आपको पानी के नजदीक रहना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अतः अवसरानुकूल आप अपनी इस रूचि का भी पालन करते रहेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी स्वस्थ एवं पुष्ट रहेंगी। आपके अन्दर कृतज्ञता का सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उसके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे तथा उसके उपकार को पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप हमेशा अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर

कभी भी नहीं बैठेंगे। आप अत्यन्त ही वाक्पटु होंगे तथा आप वाणी की चतुरता से कई कार्यों को सिद्ध करेंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में भी सफल रहेंगे। आपकी प्रवृति त्याग की भावना से भी युक्त रहेगी। साथ ही आपका कद मध्यम रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगे। शत्रुओं का नाश करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे सर्वदा भयभीत से रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामान्य लोगों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय भी रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

विभिन्न प्रकार की कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे तथा हमेशा सदाचारी जीवन व्यतीत करने के लिए जीवन में यत्नशील रहेंगे। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा आपको जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष उसे कह देंगे। इसके साथ ही आप सोच विचार कर अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा पुष्ट रहेंगे तथा अपने कुल एवं परिवार में भाईयों की अपेक्षा श्रेष्ठ माने जाएंगे। समस्त परिवारजन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप चित्रकारी या इंजीनियरिंग में विशेष सफलता अपने जीवन में अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप स्वभाव से ही शूरवीर तथा साहसी पुरूष रहेंगे। सत्य के प्रति आप निष्ठावान होंगे तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के स्वामी होंगे अतः आप अपने कार्य या आजीविका आदि को स्थिर रूप में ही करना पसन्द करेंगे। आप सभी लोगों के प्रति प्रेम तथा सम्मान की भावना का प्रदर्शन करेंगे तथा अनावश्यक वैमनस्य का भाव अपने मन में नहीं रखेंगे। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा सुन्दर सुशील एवं बुद्धिमती भार्या की आपको प्राप्ति होगी। आपकी प्रवृति नाटकों के प्रति भी रहेगी अतः इसे भी आप सम्पन्न करेंगे। आपका शरीर स्थूल रहेगा तथा कभी कभी आप ऐसे कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे समस्त कुल एवं परिवार को परेशानी तथा कष्ट की अनुभूति भी होगी लेकिन समाज में आपकी लोकप्रियता बनी रहेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वप्रकार के सद्गुणों सम्मान तथा आदर से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगे। आप अपने अन्य भाईयों में निश्चित रूप से श्रेष्ठ एवं सम्माननीय समझे जाएंगे। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा। आपकी चाल अत्यन्त ही आकर्षक होगी परन्तु स्वभाव में सहनशीलता के भाव का प्रायः अभाव ही रहेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय मे आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इस प्रकार करने से आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

Hema

कर्क राशि में पैदा होने के कारण आप का स्वास्थय मध्यम रहेगा आपके समस्त कार्य चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे तथा धन से हमेशा युक्त रहेंगी। आपके जीवन में धनाभाव नहीं रहेगा। आप हार्दिक श्रद्धा द्वारा अपने धर्म के पालन में तत्पर रहेंगी। आप गुरूजनों की प्रिय होंगी तथा उनका स्नेह हमेशा आपको प्राप्त होगा। आप अत्यन्त बुद्धिमती होंगी तथा सभी लोग आपकी बुद्धि के प्रभाव को स्वीकार करेंगे। कभी कभी आपको क्रोध भी अधिक मात्रा में आयेगा तथा ऐसे ही कभी कभी आप अत्यन्त दुःख की भी अनुभूति करेंगी। आपकी मित्रता अच्छे एवं सद्गुणी लोगों से रहेगी। अनेक कार्यो तथा कलाओं के विषय में

आपको यथोचित ज्ञान रहेगा। शारीरिक बल की आप में न्यूनता रहेगी तथा घर से आपको कोई खास लगाव भी नहीं रहेगा। आप घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपका सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक तथा तेज से युक्त होगा तथा आपकी प्रकृति भी वात तथा कफ से युक्त रहेगी। आप अपने अथक परिश्रम तथा तीव्र बुद्धि से उपार्जित धन से अतुल धन की स्वामिनी बनेंगी। विप्र तथा देवताओं में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार इनका सम्मान तथा पूजार्चना करती रहेंगी। श्रेष्ठकुल में उत्पन्न लोगों के लिए आपके मन में पूर्ण सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा इस भाव को व्यावहारिक रूप में भी परिणित करेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

आप वेदादि शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्ति में अभिरूचि रखेंगी तथा इनके ज्ञान को प्राप्त करने में सफल भी होंगी। अन्य कलाओं का भी आप पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। आपका आचरण उत्तम रहेगा परन्तु शारीरिक बल मध्यम रहेगा। फूलों की सुगन्ध तथा जल क्रीड़ा की आप विशेष शौकीन रहेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समाज में पूर्ण ख्याति प्राप्त करेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

पति पर आपका विशेष प्रभाव रहेगा। इनको अपने वश में करने में आप पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। जल विहार में आप अलौकिक सुख की अनुभूति करेंगी। आपका मित्रता का क्षेत्र विस्तृत होगा तथा आपके द्वारा बहुत से मकानों का भी निर्माण किया जा सकता हैं। या आप स्वयं भी मकान की स्वामिनी हो सकती हैं। आप सामान्य कद की ऊंचाई से युक्त रहेंगी तथा आप वक्रगति से शीघ्र चलने वाली होंगी। पुत्र संख्या भी आपकी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वको द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप जीवन में नाना प्रकार की सम्पत्तियों की स्वामिनी बनेंगी तथा ज्योतिष शास्त्र का भी आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा एवं इसमें आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी। आपका जीवन सम्पूर्ण उतार चढाव का रहेगा। कई बार उत्थान पतन आपको देखना पड़ेगा। आपकी एक विशेषता यह भी होगी कि आप केवल प्रेम से ही वश में की जा सकेंगी दवाब या बलपूर्वक आपसे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करवाया जा सकेगा। आप अपने मित्रों को पूर्ण आदर देंगी। अतः मित्रों के मध्य प्रिय रहेंगी। साथ ही जीव पालन, उद्यान या जलाशय निर्माण में भी आप रूचिशील रहेंगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य से युक्त होकर आप अपने द्वारा बनाये हुए घर में रहेंगी तथा अपने कार्यों को धैर्य से सम्पन्न करेंगी। आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्रा में व्यतीत होगा। आप विनयशील होंगी तथा कृतज्ञता के गुण से भी सम्पन्न रहेंगी। आप राज्य के किसी उच्च पद को सुशोभित कर सकती हैं। आप हमेशा सत्य तथा प्रिय बोलने के लिए प्रयत्न शील रहेंगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

आपके लिए पौषमास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्ट फल कारक होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी तक, 2,7,12 तिथियों अनुराधा नक्षत्र, नागकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार तृतीय प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य शिवालय में जाकर विल्व पत्र चढ़ाने चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, मिश्री इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र का कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा सरलता एवं समानता का भाव इनके मन में विद्यमान रहता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता भी रहती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक होते है। विद्वता एवं बुद्धिमता का भाव इनमें विद्य मान रहता है तथा नवीन विचारों के सृजन में अत्यंत ही दक्ष होते है। लोग भी इनके विचारों से प्रभावित तथा सहमत रहते है। फलतः सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान इनका बना रहता है। भौतिकता के प्रति इनके मन में तीव्र आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों तथा उपकरणों का उपभोग करने में ये सुख की अनुभूति करते हैं।

प्राकृतिक दृश्यों के अवलोकन से ये प्रसन्नता की अनुभूति करते हैं। ये व्यवहार कुशल व्यक्ति होते हैं तथा चतुराई से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करते हैं फलतः उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहते हैं। नवीन वस्तुओं के उत्पादन कार्य में भी ये दक्ष होते हैं तथा इस क्षेत्र में इनका उल्लेखनीय योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं शक्तिशाली व्यक्ति होंगे तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण रहेगा। जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी अतः शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में अपने आपको समाज के समक्ष स्थापित करेंगे। एक विचारक के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा होगी। आप एक भौतिकता वादी व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से परेशानी भी होगी। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपराक्रम एवं बुद्धि से अपने सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति सत्कर्मों की ओर अग्रसर होगी तथा यत्नपूर्वक अच्छे कार्यों को करने के लिए तत्पर होंगे। अपने इन कार्यों से आपको सामाजिक मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा ख्याति के भी योग बनेंगे। धनैश्वर्य से आप युक्त रहेंगे परन्तु यदा कदा लोलुपता का भाव भी आप में उत्पन्न होगा जिससे आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः ऐसी प्रवृतियों पर नियंत्रण रखना चाहिए।

यात्रा या भ्रमण आदि में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा समय समय पर यात्राएं करते रहेंगे। आपकी प्रवृति अधिक व्यय करने की रहेगी तथा भौतिक उपकरणों या साधनों पर मुक्त भाव से व्यय करेंगे परन्तु आर्थिक सुदृढ़ता के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथापि धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे परन्तु तीर्थ यात्रा आदि आप कर सकते हैं। मित्र एवं बन्धु वर्ग में भी आपकी

लोकप्रियता होगी तथा सहयोग एवं लाभ भी मिलता रहेगा। इस प्रकार धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों से युक्त होंगे तथा आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Hema

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते है तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगी। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होगीं जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

आप एक कर्तव्यपरायण महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगी। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझीं जाएंगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्यौतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रूचिशील होंगी।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी महिला होंगी तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Hema

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्को से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर

आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी। इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

Hema

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाए रहेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पति के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगी। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगी।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगी तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगी। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगी तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगी। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकती है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगी।

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

Hema

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विदुषी के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे परंतु रदा कदा अपनी मर्जी के कार्य भी करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह लेंगे वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगी लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगी परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी स्वगृही होकर सप्तम भाव में ही बैठा है सामान्यतया कन्या राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यवान एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है। स्वगृही राहु के प्रभाव से उसमें तेजस्विता पराक्रम साहस एवं कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की तेजस्वी महिला होंगी तथा विविध प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। अपने सभाषण में सामान्यतया मधुर शब्दों का ही प्रयोग करेंगी तथा स्वच्छता की ओर विशेष सजग रहेंगी। स्वगृही राहु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अन्य अंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। इससे सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा। वह आधुनिक विचारों की भी महिला होंगी एवं पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति मन में आकर्षण रहेगा कला एवं संगीत में भी रूचिशील रहेंगी तथा उनका काफी समय इसी पर व्यतीत होगा।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से यद्यिप आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा परन्तु स्वगृही होने के कारण विशेष समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या राहु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से भी विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। आप महत्वपूर्ण कार्यो एवं योजनाओं को आपसी सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे इससे संबंधों में मधुरता तथा विश्वास में वृद्धि होगी।

आपका विवाह मध्यम परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वे सम्पन्न होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा अवसरानुकूल महत्वपूर्ण योजनाओं या कार्यो में परस्पर सलाह का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा भावना होगी तथा सुख दुख में उनका अपनी ओर से पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने हास्य प्रिय व्यवहार से सन्तुष्ट रखेंगी जिससे वे उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति मध्यम रहेगी तथा अत्यावश्यक होने पर ही आपको साझेदारी का निर्णय लेना चाहिए। अतः यदि किसी संबंधी से साझेदारी हो तो इससे

विश्वसनीयता बनी रहेगी एवं लाभ भी होगा।

Hema

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है। साथ ही वह सुशील सहिष्णु एवं बुद्धिमान होता है तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति चंचल तथा सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को शांत मन से सम्पन्न करेंगे वह एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रूचि होगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे जिससे आपके सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पति गौर वर्ण की आकर्षक एवं सुंदर व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। उनकी शारीरिक संरचना भी उत्तम रहेगी तथा पुष्टता एवं सुडौलता से उनके सौन्दर्य की अभिवृद्धि होगी। जलीय राशि मकर के प्रभाव से उनमें आयु के साथ साथ स्थूलता भी आ सकती है। साथ ही कला एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा महिला संबंधियों का इसमें विशेष योगदान रहेगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर विश्वास का भाव भी बना रहेगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति साधारण रहेगी। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथाा वे भी आपको यथोचित स्नेह तथा नैतिक सहयोग प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति की पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियों को भी वह अपने मृदु व्यवहार एवं वाणी से प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं माता या अन्य मातृपक्ष के साथ साझेदारी से वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Bhuvaneswar

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बृहसपति है। साथ ही चंद्रमा भी दशमभाव में ही स्थित है। धनु राशि अग्नि तत्व एवं चंद्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा एवं श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही उन्नति के मार्ग पर आप सामान्यतया अग्रसर होंगे तथा समयानुसार इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे। जिससे आपको तात्कालिक लाभ होगा।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्रफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थ यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली, धातु एवं रत्न कार्य, मिटटी के खिलौने, ईंट बालू , आदि का कार्य प्राइवेट कम्पनी या वित्त संस्था का स्वामित्व, द्रव्य पदार्थ दूध,दही, घी, सरकारी ठेके का कार्य तथा आयात निर्यात संबंधी कार्यो से आपको इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा इससे उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर रहेंगे। एवं अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानो का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार आरम्भ करना चाहिए।

दशमभाव में चंद्रमा के प्रभाव से जीवन में आपको यथोचित मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करेंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे तथा सभी लोग वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपका यश भी फैलेगा। आप किसी सम्मानित या सांस्कृतिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते हैं जिससे आप का समाज में सम्मानित स्थान होगा अपने जीवन में अर्जित सफलताओं एवं उपलब्धियों से आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान एवं मृदुस्वभाव के होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही समाज में वे एक आदरणीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सर्तक होंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। आप दोंनो के आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धांतिक एवं वैचारिक समानता विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी रहेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को उन्ही की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Hema

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही मंगल भी स्वराशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। मेष राशि तथा मंगल ग्रह दोनों अग्नितत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से युक्त होगा तथा श्रम के भाव की अल्पता रहेगी तथा जीवन में आप वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करके मानसिक शांति की अनुभूति करेंगी।

मंगल दशमभाव में स्वगृही होने से आप के लिए आजीविका सेना, पुलिस, डाक्टर, इंजीनियर, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत इंजीनियरिगं, होटल प्रबंधक या कर्मचारी, अग्नि से संबंधित विभाग, शस्त्र विभाग एवं अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से आप को वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगी। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य एवं चरमोन्नति के लिए उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करें।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों के व्यापार से सुवर्ण लोहा तथा अन्य धातु कार्यो से, विद्युत उपकरणों का व्यापार या उत्पादन, औषधि का विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक वस्तु या होटल आदि के कार्य से व्यापार में इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित होंगी। इसके साथ ही अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगी तथा आपके प्रसंसक बनेंगे। अतः व्यापार में आपको उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यो का ही चुनाव करना चाहिए।

दशमभाव में स्वक्षेत्री मंगल की स्थिति से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही सौभाग्य से भी आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप को सामाजिक धार्मिक या अन्य संस्थाओं में भी किसी उच्च पदाधिकारी के रूप में मनोनीत किया जा सकता है जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप एक अधिकार सम्पन्न महिला होंगी तथा सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

आपके पिता एक पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं गंभीर प्रवृति के व्यक्ति होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण ध्यान रहेगा तथा उच्च स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रसिद्धि में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी सामान्यतया मधुरता रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त पिता की आप आज्ञाकारी पुत्री भी होंगी।

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2026

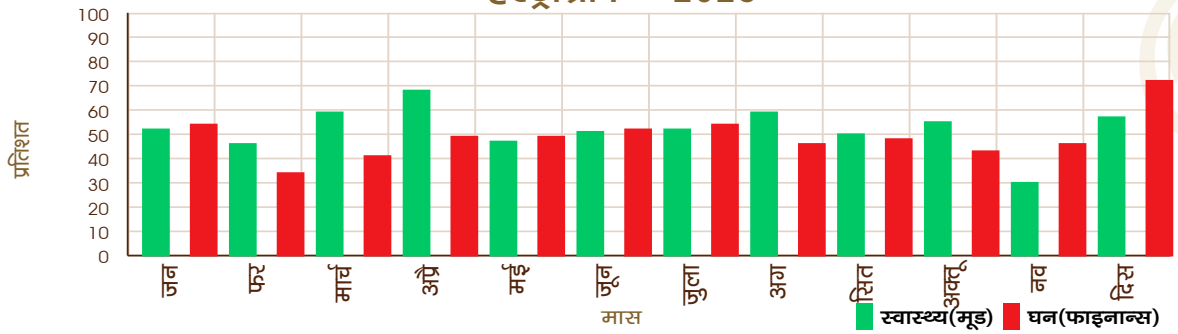

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2026

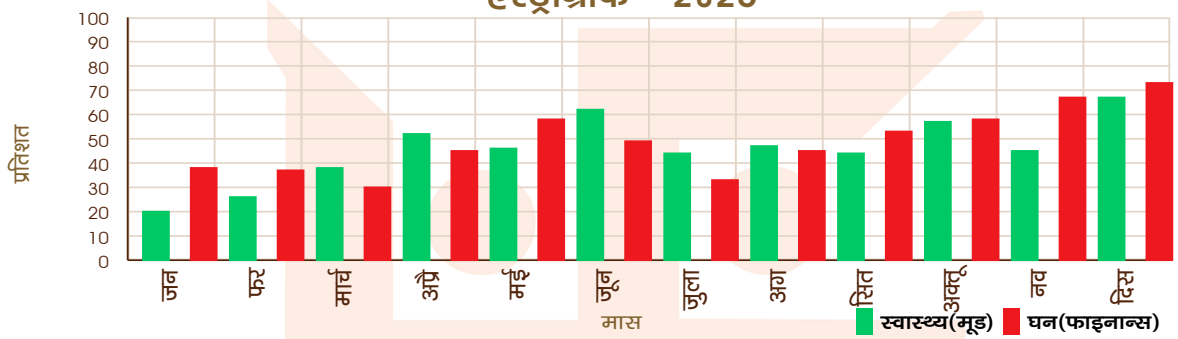

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2027

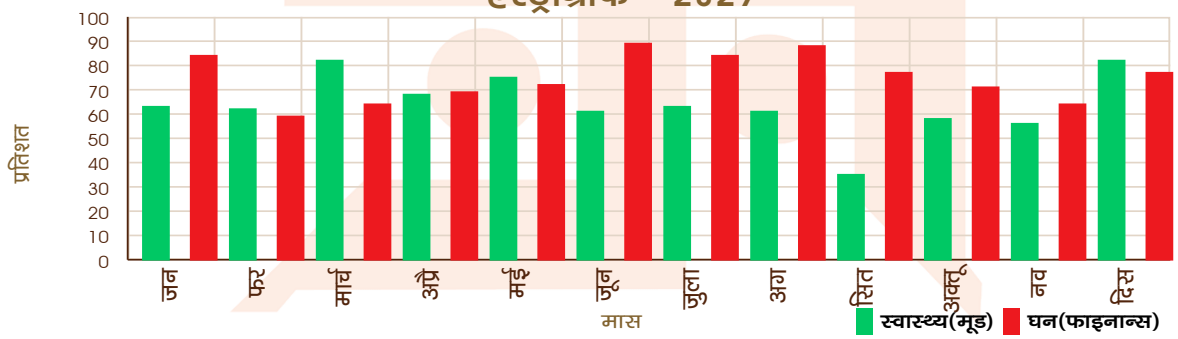

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2027

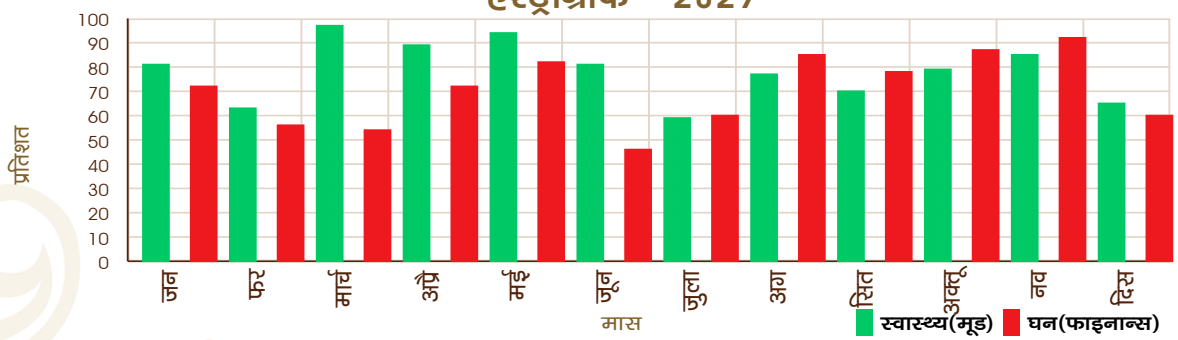

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2028

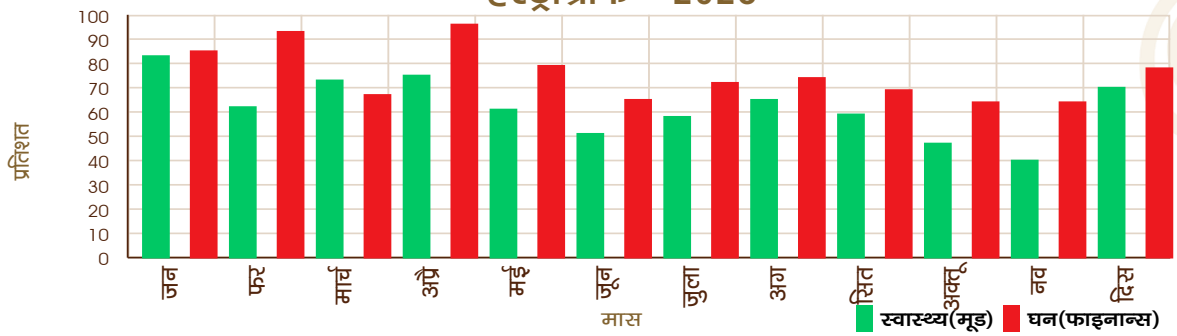

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2028

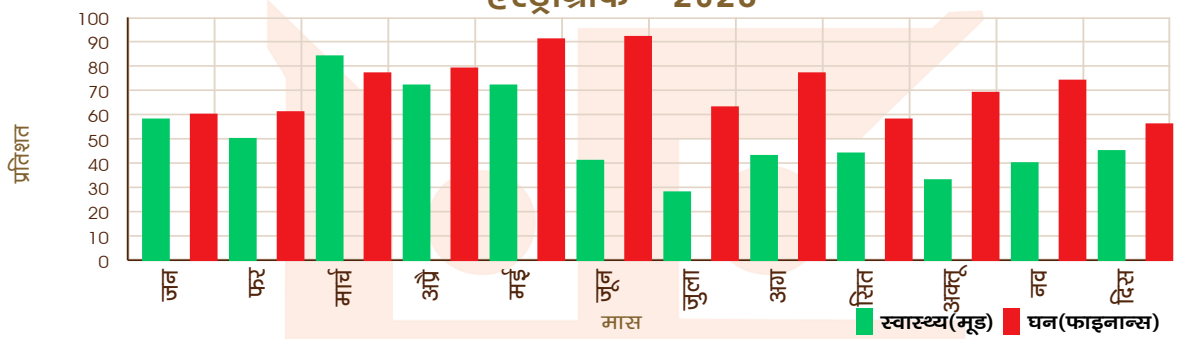

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2029

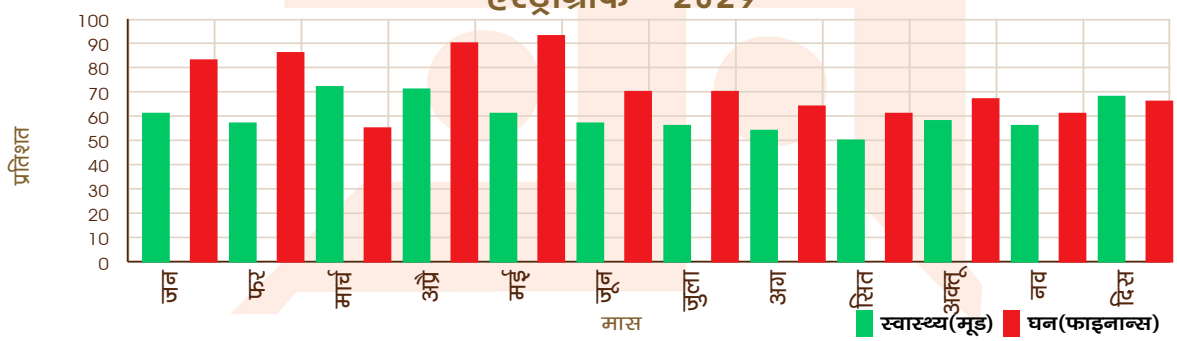

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2029

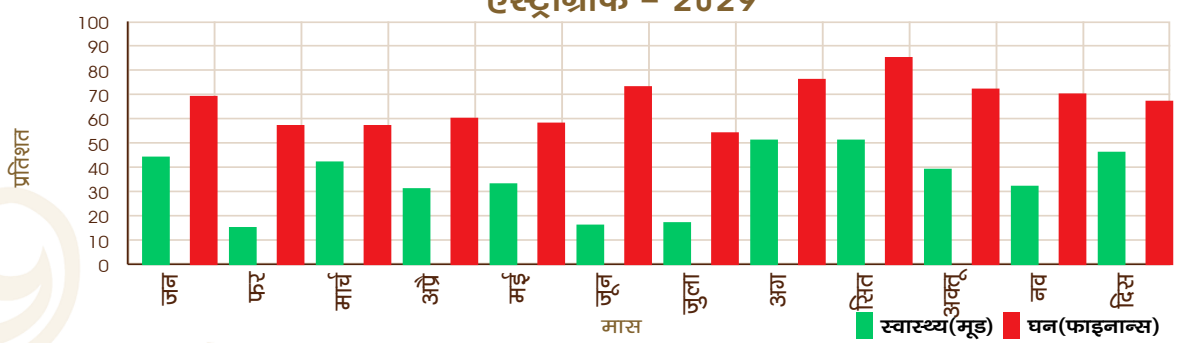

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2030

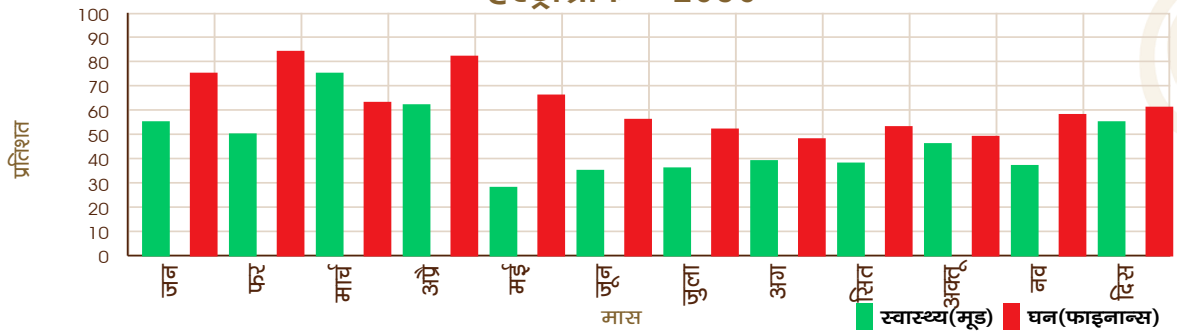

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2030

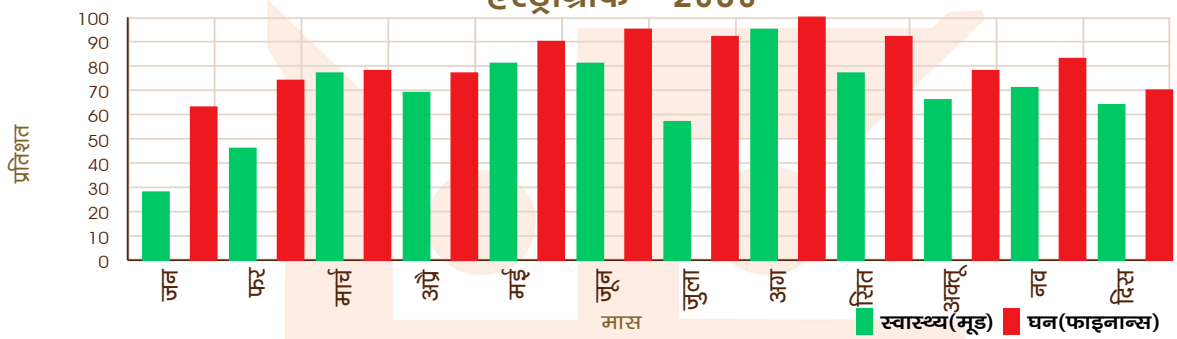

Bhuvaneswar
एस्ट्रोग्राफ – 2031

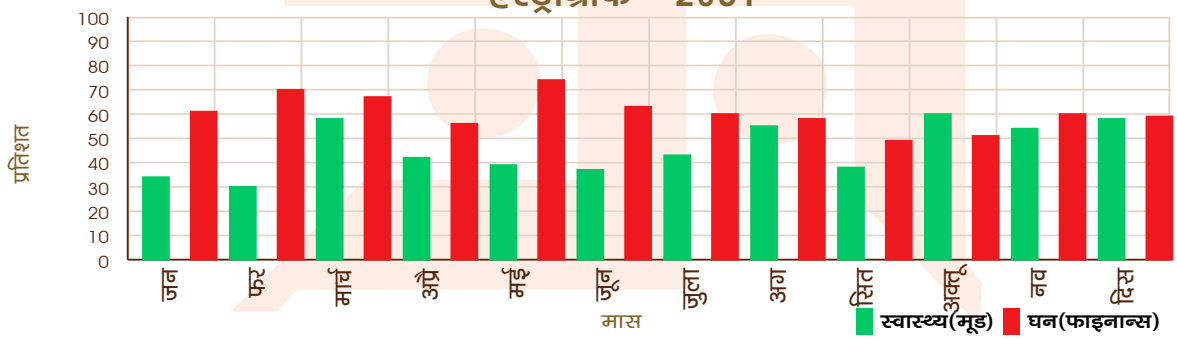

Hema
एस्ट्रोग्राफ – 2031